جمعية الدعـــوة والإرشاد
وتوعية الجاليات بالأحســـاء
AL-AHSA ISLAMIC CENTER

هندي

لماذا الإسلام ؟

इस्लाम ही क्यों ?

تأليف: فاتن صبري
ترجمة : عطاء الرحمن السعيدي

لماذا الإسلام ؟

इस्लाम ही क्यों ?

إعداد: فاتن صبري

लेखक: फ़ातेन सबरी

ترجمة: عطاء الرحمن السعيدي

अनुवादक: अताउर्रहमान सईदी

مراجعة: أفروز عالم المدني

संशोधन: अफरोज़ आलम मदनी

ⓒ المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالاحساء ، ١٤٤٣هـ

فهرسة مكتبة الملك فهد الوطنية أثناء النشر

جمعية الدعوة بالأحساء
أسلمت حديثا فماذا أتعلم ؟ باللغة الفرنسية. / جمعية الدعوة بالأحساء .- الاحساء ، ١٤٤٣هـ

٥٩ ص ؛ ٢٢×٢٤ سم

ردمك: ٣-٤-٩٠٩٢٦-٦٠٣-٩٧٨

١- الاسلام - مبادىء عامة ٢- اركان الاسلام أ.العنوان

ديوي ٢١٠ ١٤٤٣/١٧٦٣

رقم الإيداع: ١٤٤٣/١٧٦٣
ردمك: ٣-٤-٩٠٩٢٦-٦٠٣-٩٧٨

فهرس المحتويات

विषय- सूची

كلمة المؤلف

लेखक के शब्द !

पुरे संसार में अपनी यात्रा के दौरान मैंने कई भाषाएँ सीखीं तथा विभिन्न संस्कृतियों को जाना, अनुयायियों की विभिन्न संस्कृतियों तथा सभ्यताओं और लोगों की विभिन्न भाषाओं तथा मान्यताओं को देखते हुए, हमें पता चलता हैं कि मानवीय मूल्यों, नैतिकताओं तथा मानवी अर्थों के बारे में आम जनमानस में साझा है। हमारी समस्याएं चुनौतियां और महत्वकांक्षाएं बहुत ही एक दूसरे से मिली जुली हैं, लोग न केवल मानवीय मूल्यों, नैतिकताओं का साझा करते हैं, बल्कि ऐतिहासिक पृष्ठभूमि. धर्म और आस्था की उत्पत्ति में भी करते हैं। निःसंदेह हम सभी आदम से मिलते हैं तथा आदम का एक ही धर्म और आस्था था, अतः विभिन्न धर्मों तथा आस्थाओं एवं विश्वासों का पाया जाना यह मनुष्यों की ओर से है।

लोगों की मान्यताओं पर विचार करने से हमें पता चलता है कि अधिकतर अनुयायी जिनके पास धार्मिक विरासत तथा धार्मिक प्रतीक है, उनमें से अधिकांश अभी भी ब्रह्मांड के निर्माता के अस्तित्व पर विश्वास रखते हैं तथा प्रतिकूल परिस्थितियों में उसका सहारा लेते हैं। यह इस बात की पुष्टि करता है कि इन धर्मों तथा मतों में एक प्रमाणिक और सच्चे धर्म से उपजी ऐतिहासिक

उत्पत्ति है | वर्तमान लोगों में धार्मिक विरासत में एकेश्वरवाद. एक अल्लाह पर विश्वास तथा उसी की उपासना की विशिष्टता का सिद्धांत है | और इन धर्मों तथा पुस्तकों में संकेत तथा सबूत हैं जो संकेत करते हैं कि उनकी जड़ें और उत्पत्ति इस्लाम तथा एकेश्वरवाद के सिद्धांत के कारण हैं |

एक प्रश्न जो लोंगों के बुद्धि में आता है वह यह है कि इस्लाम ही क्यों ? सरल रूप से इसका उत्तर यह है किः क्योंकि आदम -उन पर अल्लाह की शांति हो- जो मनुष्यों के पिता हैं उनका धर्म इस्लाम था | इस पुस्तक में मैं प्रस्तुत करूंगा कि इस्लाम ही पहला, सच्चा तथा उचित धर्म क्यों है ? जो मानवता के साथ ही प्रारंभ हुआ,और जो कई अनुयायियों से विदा हो चुका है तथा लोग अपने सत्य धर्म इस्लाम से हट गए हैं | और मैं खोल खोल कर बयान करूंगा कि इस्लाम एक ऐसा धर्म क्यों है जिसके साफ चेहरे को -पश्चिमी देशों- में बिगाडने तथा जिस पर आतंकवाद के आरोपों का ठेकरा फोड़ने और विकृत करने का अपवित्र प्रयास किया जाता है ? जबकि ऐसा संसार के अन्य धर्मों के संग नहीं किया जाता |

इस पुस्तक का उद्देश्य लोगों को इस्लाम धर्म से परिचित कराना है,तथा यह भी बताना है कि यह

एकेश्वरवाद का संदेश है जिसे अल्लाह ने सभी समुदाय के लिए भेजा है | और यह कि अल्लाह द्वारा भेजे गए सभी दूत इस सिद्धांत को लोगों को याद दिलाने तथा इसे संरक्षित करने के लिए प्रयासरत थे, इस्लाम का उद्देश्य लोगों के मन,विचारों तथा आस्थाओं को अशुद्धियों तथा विकृतियों से शुद्ध करना और उन्हें विश्वपालक को याद दिलाना तथा उन्हें संदर्भित करना और उस से सीधे संवाद करने की शिक्षा देना है | साथ ही साथ मन की कठोरता और उनके परम्पराओं तथा रीति-रीवाजों से घिरे सोच को तोड़ना, उनके दिलों को स्वतंत्र करना तथा लोगों को अविष्कार पर उभारना है |

विभिन्न सभ्याताओं तथा लोगों को समायोजित करने, समकालीन घटनाओं तथा विकासों का बराबर ध्यान रखने, सदैव स्थायित्व और बाकी रहने की क्षमता में यह पुस्तक इस्लाम की विशिष्टता, उत्कृष्टता और लचीलेपन को प्रदर्शित करती है | जबकि इस्लाम और उसके विरुद्ध शुरू किए गए नकारात्मक प्रचार के सामने उसके दृढ़ता को बदनाम करने के प्रयासों के वावजूद,जो कि आतंकवाद के रूप में वर्णित करता है और लोगों को उससे लड़ने के लिए प्रेरित किया जाता है |

दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि बहुत सारे लोग इस्लाम के विषय में निर्णय लेते हैं जबकि वे इस्लाम के सिद्धांतों

या नियमों को या इस बात का ज्ञान नहीं रखते हैं कि इस्लाम किस चीज़ का आवाहन करता है । और उनमें से किसी एक को यह नहीं पता है कि पवित्र कुरआन में लोगों के लिए उपदेश, ज्ञान तथा भलाई के बारे में क्या है ? निस्संदेह लोगों की इस्लाम के बारे में अज्ञानता के कारण हमारे ऊपर जिम्मेदारी है कि हम इस्लाम की सच्चाई को प्रष्ट करें, इसलिए मैं इस्लाम के बारे में किसी प्रकार का निर्णय लेने से पहले उन लोगों को आमंत्रित करता हूँ जो सत्य से अपरिचित हैं तथा उनकी आँखों पर परदा पड़ा है कि वे पुनर्विचार करें तथा उन्हें नोबल कुरआन को पढने का अवसर देता हूँ ।

मैं सर्वशक्तिमान अल्लाह से प्रार्थना करता हूँ कि इस पुस्तक को एक ऐसा दीप बना दे जो सत्य खोजने वाले,उज्जवल दिमाग और खुले दिल वाले के मार्ग को रोशन करदे तथा इसे सभी लोगों के लिए इस्लाम की सहिष्णुता को जानने के लिए शांति का संदेश बना दे ।

भूमिका

पृथ्वी पर मनुष्य की उपस्थिति से -आदम[1] अ़लैहिस्सलामसे लेकर अन्तिम पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तक- इस्लाम का मूल्य संदेश मात्र विश्वपालक अल्लाह[2] ही की पूजा करना,उसी से सीधे

---

[1] यह पहले मनुष्य है जिन्हें विश्वपालक,अल्लाह ने पैदा किया है
[2] सृष्टिकर्ता ,अल्लाह एक ही है,वह किसी के अधीन नहीं सभी उसके अधीन तथा उसके सम्मुख मुहताज हैं और वह सबसे निस्पृह और निरपेक्ष है, उसके महामहिम के लिए उचित नहीं कि वह अपने लिए पत्नी या पुत्र अपनाए,अतः न उससे कोई पैदा हुआ न उसे किसी ने पैदा किया है । और न कोई उसका समकक्ष है । न ही उसके व्यक्तित्व में न उसकी विशेषताओं में न उसके कर्मों में । कारण हमारे लिए नियम है,हम मनुष्य हैं,हम स्थान तथा समय में जीते हैं, अल्लाह जिसने स्थान तथा समय को पैदा किया तो अवश्य रूप से वह उन दोनों के सम्बंध से पवित्र तथा महान है,और हमारी ओर से यह मानना एक बहुत बड़ी मूर्खता एवं गलती है कि वह दोनों में से एक से घिरा हुआ है,अल्लाह ही ने कार्य-कारण का नियम तथा कानून बनाया है । अतः उसे अपने ही बनाए कानून के अधीन नहीं माना जा सकता है । इस लिए अल्लाह नहीं बदलता,निःसंदेह उसने समय बनाया तथा वह समय का अधीन नहीं है,जिस समय से हम गुजरते हैं वह उसी समय से नहीं गुजरता,न ही वह थकता है, न ही उसे भौतिक रूप में रहने या धरती पर उतरने की आवश्यकता है, इसी कारण हम उसे इस जीवन में देख नहीं सकते क्योंकि हम समय तथा स्थान में घिरे हैं जबकि अल्लाह इस से अलग थलग है,उदाहरण के लिएः बिना खिड़कियों के एक कमरे में

संवाद करना, केवल उसी की भक्ति होना तथा उसी की दासता समर्पित करना, केवल उसी की ओर आकृष्ट होना, उसके भाग्य, पुस्तकों, संदेष्टाओं, फरिशतों एवं दूतों तथा महाप्रलय के दिन पर विश्वास करना और ईमान लाना है। सृष्टिकर्ता परमेश्वर उन लोगों में से एक है जो स्थिर है, और महामहिम के लिए पत्नी या पुत्र अपनाना उचित नहीं।

विश्वपालक ने सभी संदेष्टाओं को सभी समुदाय की ओर एक ही संदेश तथा मुक्ति का एक ही मार्ग दे कर भेजा. तथा वह संदेश बहुत ही सरल और आसान है। वह यह है! मात्र एक अल्लाह पर ईमान लाना. केवल उसी अकेले की उपासना करना, महाप्रलय के दिन पर ईमान लाना जोकि लेखा जोखा का दिन है जिसमें सारे लोगों का लेखा जोखा उनके कर्म अनुसार होगा फिर लोग या तो स्वर्ग में जायेंगे या नर्क में। अल्लाह ने अपने संदेष्टाओं के संग आकाशीय पुस्तकें अवतरित कीं जो पृथ्वी के सभी समुदाय के प्रावधानों,विधियों तथा कानूनों को स्पष्ट करती हैं, उनका आज्ञापालन सभी पर अनिवार्य है तथा उन्हीं के अनुसार सब का लेखा जोखा होगा। निःसंदेह लोगों के बीच दूतों तथा पैगंबरों की उपस्थिति

--बैठा व्यक्ति केवल कमरे के भीतर देख सकता है। बाहर की चीजें देखने के लिए उसे कमरे से बाहर जाना ही पड़ेगा।

एक दीप के प्रकार है जो अपने अनुयायियों के लिए उज्वल मार्ग दिखाते तथा उन्हें मुक्ति प्राप्त करने का रास्ता बताते हैं। प्रन्तु यह उस समय हो सकता है जब अनुयायी लोग अपने दूतों तथा पैगंबरों की शिक्षाओं का पालन करके मात्र एक सृष्टिकर्ता की पूजा करेंगे।

विश्वपालक-रब- ने उस समय के लोगों में सबसे पवित्र तथा धर्मपरायण लोगों को चुना था ताकि वे पैगंबर तथा उनके बीच न्यायाधीश बन सकें और उन्हें अपने विश्वपालक -सत्य रब- की पूजा याद दिला सकें। परन्तु समय बीतने के साथ.साथ लोग सत्य मार्ग से हट गए, अपने इच्छाओं का पालन किया तथा विश्वपालक -सत्य रब- के अतिरिक्त अन्य की पूजा की, अपने तथा अपने भगवान के बीच मध्यस्था बनाया, तथा उन्हीं को देवता बना लिया।

अलबत्ता, सत्य मुसलमान तथा पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के अनुयायियों ने बिना किसी परिवर्तन इस्लाम के संदेश तथा एकेश्वरवाद के संदेश को संरक्षित रखा। प्रन्तु पवित्र कुरआन मात्र अकेले बिना किसी परिवर्तन जैसे के तैसा जिस प्रकार अन्तिम संदेष्टा पर अवतारित हुआ बाक़ी बचा। अतः इस प्रांरभिक बिंदु से स्पष्ट हो गया कि पवित्र कुरआन अन्तिम ईश्वरीय संदेश है जो हर प्रकार की परिवर्तन से सुरक्षित है वही

सत्य तथा अन्तिम पुस्तक है जिसे स्वीकार किये बिना कोई सफल नहीं हो सकता ।

अल्लाह पाक ने फरमाया :

الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِينًا (المائدة:٣)

अर्थः (आज मैंने तुम्हारे लिए तुहारे धर्म को संपूर्ण कर दिया तथा तुम पर अपनी कृपा पूरी कर दी, और तम्हारे लिए इस्लाम धर्म को पसन्द कर लिया ।) सूरः मायेदः -3

निस्संदेह इस्लामी शिक्षाओं में से है :

- नमाज़ के माध्यम से विश्वपालक के संग लगातार संपर्क बनाए रखना ।
- रोज़े में मानव इच्छाशक्ति को मजबूत करना तथा स्वयं उसे नियंत्रित करना और रोजह के समय दूसरों के साथ दया करना और सद्भाव की भावनाओं को विकसित करना ।
- ज़कात के माध्यम से गरीबों तथा जरूरत मंदों के लिए अपनी बचत का कुछ प्रतिशत खर्च करना ।

यह एक ऐसी पूजा है जो मनुष्य को खर्च तथा दान देने के गुणों और कृपणता एवं कन्जूसी समाप्त करने पर सहयोग करती है ।

✺ रचयिता के लिए निष्पक्षता एक समय तथा स्थान पर मक्का[1] के हज्ज यात्रा के माध्यम से सभी आसथावानों (मूमिनों) के लिए एक अनुष्ठान तथा भावनाओं का प्रदर्शन करना।

यह विभिन्न मानव संबद्धताओं, संस्कृतियों, भाषाओं, पदों तथा रंगों के प्रति निमार्ता के दृष्टिकोण में एकता का प्रतीक है।

इस्लाम में उन सभी रसूलों तथा दूतों पर विश्वास करना शामिल है जिन्हें अल्लाह ने बिना भेदभाव मनुष्यों के लिए भेजा है। तथा निस्सन्देह किसी भी पैग़म्बर या संदेष्टा को नकारना इस्लामी आस्था के विरुद्ध है, और यह उन लोगों के साथ एक मज़बूत बंधन बनाता है जो आसमानी धर्मों पर विश्वास करते हैं। अल्लाह कुरआन में फरमाया हैः

آمَنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْهِ مِن رَّبِّهِ وَالْمُؤْمِنُونَ ۚ كُلٌّ آمَنَ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّن رُّسُلِهِ ۚ وَقَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۖ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ (البقرة/٢٨٥)

अर्थः (रसूल उस चीज़ पर ईमान लाये जो उसकी ओर अल्लाह (तआ़ला) की ओर से उतारी गई तथा मुसलमान

---

[1] इस समय मक्कह तथा मदीनह सऊदी अरब देश में है, और मक्कह वह नगर है जिसमें कअ़बह है. और वहीं पवित्र मस्जिद तथा -बैतुल-ह़राम- है. जिसके प्रति मुसलमानों का मानना है कि एकेश्वरवाद तथा विश्वपालक -रब- की पूजा के निम्ति लोगों के लिए बनाया गया पहला घर है।

भी ईमान लाये । यह सब अल्लाह (तआ़ला) तथा उसके फरिश्तों पर, उसकी पुस्तिकों पर, और उस के रसूलों पर ईमान लाये, उस के रसूलों में से किसी के बीच हम अन्तर नहीं करते उन्हों ने कहा कि हम ने सुना तथा आज्ञापालन की, हम तुझी से क्षमायाचना करते हैं । हे हमारे पालनहार ! और हमें तेरी ही ओर लौटना है) सूरः बक़रह-285

साथ ही साथ अल्लाह ने विभिन्न समुदाय की ओर संदेष्टाओं तथा दूतों को भेजा जिनके नाम का उल्लेख कुरआन में है ।

उदाहरणतः

(नूह़,इब्राहीम.इसमाईल,इसह़ाक़,यअ़कूब,यूसुफ़,मूसा.
दाऊद,सुलैमान.ईसा आदि)

इनके अतिरिक्त अन्य भी हैं जिन का उल्लेख नहीं है, यह भी संभावना है कि हिंदू तथा बौद्ध धर्म में (जैसे राम,कृष्णा तथा गैतम बुद्ध) कुछ धार्मिक प्रतीक अल्लाह द्वारा भेजे गये दूत हों । तथा इस को नकारा नहीं जा सकता, क्योंकि कुछ लोग यह दिखावा करते हैं कि जिस प्रकार अरबों के लिए अल्लाह ने नबी मुहम्मद को भेजा उन्में कोई नबी या दूत नहीं भेजा ।

अल्लाह पाक ने फरमायाः

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّن قَبْلِكَ مِنْهُم مَّن قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُم مَّن لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ ۗ وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَن يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ فَإِذَا جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ قُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُونَ (سورة غافر / ٧٨)

अर्थः (निस्संदेह हम आप से पूर्व बहुत से संदेष्टा भेज चुके है, जिन में से कुछ की कथायें हम आप को सुना चुके हैं तथा उन में से कुछ की कथायें तो हम ने आप को सुनायी ही नहीं, और किसी संदेष्टा के (वश में यह) न था कि कोई चमत्कार अल्लाह की अनुमति के बिना ला सके. फिर जिस समय अल्लाह का हुक्म आयेगा सच्चाई के साथ फैसला कर दिया जायेगा तथा उस स्थान पर असत्यवादी लोग हानि में रह जायेंगे |) सूरः ग़ाफिर-78

इस्लाम मानवी मूल्यों तथा महिमा का संरक्षक है, तथा हमें यह सिखाता है कि लोग अधिकारों और कर्तब्यों में समान हैं,सभी के लिए सुरक्षा तथा शांति प्रदान करके सामाजिक एकता,पड़ोसी के साथ अच्छा व्यवहार करने, धन तथा संपत्ति को संरक्षित रखने,वाचा पूरी करने जैसे अन्य महान सिद्धांतों की शिक्षा देता है | और यह ऐसे सिद्धांत हैं जिसमें अन्य धर्मों के मानने वालो के संग साझा है. ताकि इस चीज की पुष्टि हो जाये कि अन्य आसमानी धर्मों की मूल सिद्धांत एक है |

इसी प्रकार इसलाम दूसरों के प्रति सम्मान तथा उन्हें ज्ञान और अच्छी सलाह के साथ इस्लाम का आहवान देने पर अधिक जोर देता तथा पुष्टि करता है |

इसी प्रकार इस्लाम मार्गदर्शन तथा अभिव्यक्ति में असभ्यता और तीव्रता, हिंसा के तरीकों या दिशा उपयोग करने से इनकार करता है | अल्लाह पाक ने फरमायाः

(فَبِما رَحمَةٍ مِنَ اللَّهِ لِنتَ لَهُم وَلَو كُنتَ فَظًّا غَليظَ القَلبِ لَانفَضّوا مِن حَولِكَ فَاعفُ عَنهُم وَاستَغفِر لَهُم وَشاوِرهُم فِي الأَمرِ فَإِذا عَزَمتَ فَتَوَكَّل عَلَى اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ المُتَوَكِّلينَ) (سورة آل عمران: ١٥٩)

अर्थः आप केवल अल्लाह की दया से उन लोगों के लिए कोमल हुए हैं, यदि आप दूषित स्वभाव और कठोर हृदय वाले होते तो वे सब आपके पास से छँट जाते, अतः आप उन्हें माफ कर दीजिए. तथा उनके लिए क्षमा की दुआ कीजिए, और मामले में उनसे परामर्श लीजिए, तो जब आप पक्का इरादा कर लीजिए तो अल्लाह पर भरोसा कीजिए, अल्लाह अपने ऊपर भरोस करने वालों से प्रेम करता है |) सूरः आले इमरान-159

अल्लाह पाक ने फरमाया :

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ (سورة الأنبياء : ١٠٧)

अर्थः (तथा हमने आपको पूरे विश्व के लिए दयावान बना कर ही भेजा है |) सूरः अम्बिया-107

इस्लाम दुश्मनों सहित अन्य के संग वाचाओं तथा शपथ का सम्मान करना, विश्वास घात से बचना, स्पष्ट तथा पारदर्शी तरीके से निपटना अनिवार्य करता है |

अल्लाह पाक ने फरमाया :

وَإِمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةً فَانْبِذْ إِلَيْهِمْ عَلَى سَوَاءٍ إِنَّ اللَّهَ لا يُحِبُّ الْخَائِنِينَ). (سورةالأنفال: ٥٨)

अर्थः (और यदि आप को किसी समुदाय की ओर से खियानत तथा विश्वासघात का डर हो जाये, तो उसका समझौता लौटा कर मामला बराबर कर लीजिए । निःसंदेह अल्लाह खियानत करने वालों को पसन्द नहीं करता है ।) सूरः अनफाल-58

अल्लाह पाक ने फरमाया :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَوْفُوا بِالْعُقُودِ ۚ أُحِلَّتْ لَكُم بَهِيمَةُ الْأَنْعَامِ إِلَّا مَا يُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّي الصَّيْدِ وَأَنتُمْ حُرُمٌ ۗ إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ مَا يُرِيدُ). (سورة المائدة:١)

अर्थः (ऐ ईमान वालो! (अल्लाह से किये गए) अपने वचन को पूरा करो, तुम्हारे लिए मवेशी चौपायों को हलाल कर दिया गया है, सिवाये उनके जो तुम्हें बता दिये जायेंगें प्रन्तु जब तुम एहराम की हालत में हो तो शिकार के जानवरों को अपने लिए हलाल न बनाओ, निःसंदेह अल्लाह जो चाहता है आदेश देता है ।) सूरः मायदह-1

अल्लाह पाक ने फरमाया :

وَأَوْفُوا بِعَهْدِ اللَّهِ إِذَا عَاهَدتُّمْ وَلَا تَنقُضُوا الْأَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللَّهَ عَلَيْكُمْ كَفِيلًا ۚ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ (سورة النحل/٩١)

अर्थः (और जब अल्लाह से वादा करो तो उसे पूरा करो तथा कसमों को पक्का कर लेने के बाद न तोड़ो, हालाँकि तुमने इस पर अल्लाह को गवाह बनाया था ।

निःसंदेह अल्लाह जो कुछ तुम करते हो उसे अच्छे प्रकार जानता है) सूरः नह्लः 91

इस्लाम जीवन की सराहना करता है यह सुलह करने वालों तथा नागरिकों से युद्ध की अनुमति नहीं देता, तथा संपत्ति,बच्चों और महिलाओं को युद्ध के दौरान भी संरक्षित रखने का आदेश देता है | इसके अलावा मृतकों को काटने या शवों के साथ विकृति करने की अनुमाति नहीं देता,क्योंकि ऐसा करना इस्लाम की नैतिकता से नहीं है | अल्लाह पाक ने फरमाया :

وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ. (سورة البقرة: ١٩٠)

अर्थः (युद्ध करो उन लोगों से जो तुम से युद्ध करते हैं, तथा सीमा उल्लंघन न करो, अल्लाह तआ़ला सीमा उल्लंघन करने वालों को पसन्द नहीं करता) सूरः बक़रहः190

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(لَّا يَنْهَاكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ لَمْ يُقَاتِلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَلَمْ يُخْرِجُوكُم مِّن دِيَارِكُمْ أَن تَبَرُّوهُمْ وَتُقْسِطُوا إِلَيْهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ (٨) إِنَّمَا يَنْهَاكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ قَاتَلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَأَخْرَجُوكُم مِّن دِيَارِكُمْ وَظَاهَرُوا عَلَىٰ إِخْرَاجِكُمْ أَن تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَمَن يَتَوَلَّهُمْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ.) سورةالممتحنة:٨-٩

अर्थः (जिन लोगों ने तुमसे धर्म के विषय में युद्ध नहीं किया तथा तुम्हें देश से नहीं निकाला, उनके साथ उत्तम

व्यवहार एवं उपकार करने तथा न्याय पूर्ण व्यवहार करने से अल्लाह (तआ़ला) तुम्हें नहीं रोकता | (अपितु) निःसन्देह अल्लाह तो न्याय करने वालों से प्रेम करता है |) अल्लाह तआ़ला तुम्हें केवल उन लोगों से प्रेम करने से रोकता है, जिन्होंने तुमसे धर्म के विषय में युद्ध किया तथा तुम्हें देश से निकाला एवं देश से निष्कासित करने वालों की सहायता की, जो लोग ऐसे काफिरों से प्रेम करें वही (निश्चित रूपसे) अत्याचारी हैं|) सूरः मुमतहिनहः 8-9

(مِنْ أَجْلِ ذَٰلِكَ كَتَبْنَا عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَنَّهُ مَن قَتَلَ نَفْسًا بِغَيْرِ نَفْسٍ أَوْ فَسَادٍ فِي الْأَرْضِ فَكَأَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيعًا وَمَنْ أَحْيَاهَا فَكَأَنَّمَا أَحْيَا النَّاسَ جَمِيعًا ۚ وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ إِنَّ كَثِيرًا مِّنْهُم بَعْدَ ذَٰلِكَ فِي الْأَرْضِ لَمُسْرِفُونَ)
سورة المائدة:٣٢

अर्थः (इसी कारण हमने इस्राईल की संतान पर लिख दिया कि जो व्यक्ति किसी को बिना इसके कि वह किसी का हत्यारा हो अथवा धरती पे उपद्रव उत्पन्न करने वाला हो, हत्या कर डाले तो एसा है कि उसने सभी लोगों की हत्या कर दी | तथा जो व्यक्ति एक की जान बचाये. उसने मानो सभी को जीवत कर दिया | और उनके पास हमारे रसूल बहुत सी स्पष्ट निशानियाँ लेकर आये, परन्तु फिर भी उन में से अधिकतर लोग धरती पर अत्याचार (तथा कठोरता) करने वाले ही रहे |) सूरः मायदह-32

निःसन्देह इस्लाम अपनी पूरी इतिहास में मानव व्यवहार के सभी पक्षों तथा कोणों को नियंत्रित करता है, तथा यह मजबूत राष्ट्रों तथा महान सभ्याताओं का निर्माण करता है, इस्लाम ने वैज्ञानिक अनुसंधान की नीव रखी तथा विचार की स्वातंत्रता प्रदान की |

इसी प्रकार इस्लाम न्याय.सहिष्णुता,मानवीय सिद्धांतों के प्रति सम्मान. और गैर-मुस्लिमों को उपलब्धियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने का आधार कायम किया है | इन सभी चीज़ों ने विभिन्न नस्लों की एक महान सभ्याता में योगदान दिया है |

इस्लाम आतंकवाद तथा घुसपैठ की समकालीन तथा विदेशी अवधारणा की निंदा करता है, जिस में दूसरे पर हमला तथा नागरिकों और मुसलमानों को डराना पाया जाता है |

इसी प्रकार इस्लाम घायलों, क़ैदियों, महिलाओं तथा बालकों की हत्या, संपत्ति को नष्ट करने और लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अनैतिक साधनों के उपयोग की भी निंदा करता है |

अतः इस्लाम का यह अर्थ कदापि नहीं है कि लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रत्येक माध्यम को उचित ठहराये) अल्लाह पाक ने फरमायाः

(قُلْ تَعَالَوْا أَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ ۖ أَلَّا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا ۖ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ۖ وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُم مِّنْ إِمْلَاقٍ ۖ نَّحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَإِيَّاهُمْ ۖ وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۖ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ۚ ذَٰلِكُمْ وَصَّاكُم بِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ). سورة الأنعام: ١٥١

अर्थः (आप कहिये आओ मैं पढ़कर सुनाऊँ कि तुम को अल्लाह ने किससे रोका है | वह यह कि उसके साथ किसी को साझेदार न बनाओ | तथा माता -पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो | और अपनी संतान को दरिद्रता के भय से हत्या न करो, हम तुम को तथा उनको जीविका प्रदान करते हैं | तथा व्यक्त एवं गुप्त अश्लीलता के निकट न जाओ, और उस प्राण की जिससे अल्लाह ने रोका है हत्या न करो, परन्तु वैधानिक कारण से, तुम को उसने इसी का निर्देश दिया है ताकि तुम समझो |) सूरःअनआ़म-151

जैसा कि मैं बाद में समझाऊंगा कि इस्लाम नैतिकता की एक मजबूत प्रणाली तथा स्वार्थ, डाह, घृणा और अन्य विशेषताओं से आत्मा को साफ करने के लिए एक ध्वनि दृष्टिकोण स्थापित करता है जो अन्याय,उत्पीड़ना और अनुशासन की कमी को जन्म देता है |

इस्लाम सम्पूर्ण सृष्टि के प्रति तथा सभी परिस्थितियों में दयालुता,दया,उदारता,करुणा तथा शांति के लिए दयालुता का आहवान करता है | और यह धैर्य,

सहनशीलता को प्रोत्साहित करता है, इस्लाम ऐसे मनुष्यों का निर्माण करता है जो सृष्टिकर्ता के बारे में जानता हो, अल्लाह के भय के साथ एक ऐसे उद्देश्य के लिए काम करने वाला हो जो झूठ तथा बुराई के मामले में अपनें अथकपन के लिए पवित्रता रखता हो. ताकि पृथ्वी पर उत्तराधिकारी बनें और अल्लाह के सर्वोच्च आदेश समर्पित करें, तथा ज़मीन पर निर्माण करते रहें और पृथ्वी वालों को लाभान्वित करते रहें |

2- मीडिया से नकारात्मक प्रचार के बावजूद इस्लाम क्यों फैलता ही जारहा है ?

कुरआन उतरने के समय से नबी मुहम्म्द सल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तथा उनके साथियों ने बराबर अत्याधिक प्रतिरोध का सामना किया, और उन पर उनके दुशमनों की ओर से सदैव हमला होता रहा, तथा इस्लाम को बदनाम करने के लिए विभिन्न अशुद्ध, अनेक चिन्ताजनक तथा गंमभीर प्रयास किये गए, फिर भी इस्लाम फलता फूलता तथा फैलता रहा, यहां तक कि इस्लाम के अनेक बडे बडे विरोधी उससे इस प्रकार जुट गये कि इस्लाम के दुश्मनों को इतना आश्चर्य हुआ कि उन्हों ने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तथा कुरआन को जादू कहने लगे, और यह इस्लाम के दुश्मन न जान सकें कि उनके अहंकार ने सच्चाई से उनके दिलों को अंधा तथा

उनकीमआँखों पर परदा डाल दिया है। और वे महसूस न कर सके कि इस्लाम के प्रति आकर्षक का मुख्य कारण उसका तथ्य,न्याय तथा सिद्धांत एवं तर्क और तर्कशैली के उपयोग के लिए आमंत्रित करना है। तथा उन पूर्व अज्ञान, विचारों, विरासत में मिली परंपराओं से स्वतंत्र का आवहान करता है जो मानव को प्रतिबंधित और कैदी बनाता है। यह महिलाओं की स्वतंत्रता तथा गरिमा को सुनिश्चित सहित सभी विभिन्न रंगों,जातियों के अधिकारों को सुरक्षित रखता है। हम संक्षिप्त के साथ निम्न में इस्लाम की कुछ अनोखी तथा आकर्षक विशेषतायें रेखांकित कर रहे हैं।

1- इस्लाम सृष्टिकर्ता (मात्र एक) की धारणा का संरक्षण करता है।

एकेश्वरवाद का अवधारण के विषय में इस्लाम का सिद्धांत जो प्रत्येक दर्शन या परिष्कार से मुक्त एक सरल, सहज प्राकृतिक आधार पर आधारित है जिसे हर छोटा, बडा, सामान्य तथा अनपढ़ आसानी से समझ सकता है। और वह यह है कि विश्वकर्ता,जगत स्वामी तथा विश्वपालक वही एक अल्लाह है उसके जैसा कोई नहीं (उसकी रचनाओं में से कुछ भी उसके समान नहीं) उसका कोई भागीदार नहीं, न ही उसके संतान हैं न ही पत्नी, बिना किसी मध्यस्थ निःस्वार्थता सीधे उसी की पूजा

तथा उपासना और उसके निर्णय तथा भाग्य को मान्यता देना अनिवार्य है ।

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ، اللَّهُ الصَّمَدُ، لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ، وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ) سورة الإخلاص: ١-٤

अर्थः (आप कह दीजिये कि वह अल्लाह एक(ही) है । अल्लाह किसी के आधीन नहीं सभी उसके आधीन हैं । न उससे कोई पैदा हुआ तथा न उसे किसी ने पैदा किया । तथा न कोई उसका समकक्ष है) सूरः इख्लास

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ۚ لَا تَأْخُذُهُ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ ۚ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ ۚ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۖ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ ۖ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ .) سورة البقرة:٢٥٣

अर्थः (अल्लाह (तआ़ला)ही सत्य पूज्य है,जिसके सिवाय कोई अराध्य नहीं, जो जीवित है, एवं सबका सहायक आधार है, जिसे न ऊँघ आये न निद्र उसके आधीन धरती और आकाश की सभी चीज़ें हैं,कौन है जो उसकी आज्ञा के बिना उसके सामने शिफारिश कर सके, वह जानता है, जो उनके सामने है, जो उनके पीछे है. और वह उसके ज्ञान में से किसी चीज का घेरा नहीं कर सकते, परन्तु वह जितना चाहे । उसकी कुर्सी की परिधि ने

धरती और आकाश को घेर रखा है । वह अल्लाह (तआ़ला) उनकी सुरक्षा से न थकता है और न ऊबता है । वह तो बहुत महान और बहुत बड़ा है ।) सुरः बक़रः253

2- इस्लाम ने कुरआन पाक की कमी ,ज़्यादती तथा खो जाने से संरक्षित किया ।

निःस्संदेह पूरा का पूरा कुरआन पाक जिस प्रकार संदेष्टा मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर जिब्रील द्वारा उतरा अपने असली एवं मूल भाषा अरबी में है, इसमें किस प्रकार का परिवर्तन नहीं किया जा सका ,तथा सदैव उसी तरह बाकी रहेगा, जैसा कि विश्वकर्ता ने उसके संरक्षित करने का वादा किया है ,यह कुरआन न ही किसी से गुप्त है न छिपा बल्कि सभी मुसलमानों के हाथों ,घरों मे पाया जाता है,तथा कोई भी इसे प्राप्त कर सकता है और इसे पढ़ कर मननचिन्तन कर सकता है और समझ सकता है ।
अल्लाह ने फरमाया :

(إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ) سورة الحجر: ٩

अर्थः (निःसंदेह हमने ही इस कुरआन को उतारा है तथा हम ही इसके रक्षक है) सूरः हिज्र-9

3- इस्लाम प्रचीन पुस्तकों को मान्यता देता है ,तथा पूर्व दूतों और नबियों का सम्मान करता है ।

इस्लाम की यह विशेषता है कि यह पिछली पुस्तकों की पुष्टि करता है बल्कि पिछले रसूलों तथा पुस्तकों पर ईमान रखना इस्लामी आस्था के सिद्धांतों में से है, इस्लाम सभी पैगंबरों का सम्मान करता है तथा उन्हें आरोपों और कमियों से मुक्त मानता है, और यह स्वीकार करता है कि सभी संदेशवाहकों का सत्य संदेश एक ही था कि निःस्वार्थता मात्र एक ही अल्लह की पूजा करो ।

अल्लाह पाक ने फरमायाः

(قُلْ آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ عَلَيْنَا وَمَا أُنزِلَ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَالنَّبِيُّونَ مِن رَّبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ) سورة آل عمران :٨٤

अर्थः (आप कह दीजिए कि हम अल्लाह पर और जो कुछ हमारे ऊपर उतारा गया है और जो इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) और इस्माईल (अलैहिस्सलाम) जो याकूब (अलैहिस्सलाम) और उनकी संतान पर उतारा गया है और जो कुछ मूसा (अलैहिस्सलाम) और ईसा (अलैहिस्सलाम) तथा दूसरे नबियों को अल्लाह की ओर से प्रदान किए गये उन सब पर ईमान लाये । हम उनमें से किसी के मध्य अन्तर नहीं करते और हम अल्लाह के आज्ञाकारी हैं ।) सूरः आले इमरान-84

4- इस्लाम आस्था की स्वतंत्रता की गारंटी देने के साथ साथ अन्य धर्मों के लोगों को आपसी पातचीत के लिए आमंत्रित करता है ।

यहूदियों तथा ईसाइयों दोनों के बीच बातचीत और एक दूसरे से बहस तथा दादविवाद कुरआन में एक से अधिक अस्थानों पर प्रस्तुत किया गया है | इस्लाम धर्म विचारों की स्वतंत्रता, सहनशीलता तथा यहूदियों और ईसाइयों के साथ अच्छे शिष्टाचार को ध्यान में रखते हुए बात चीत और लोगों के तर्क पर आधारित है | अतः कुरआन सबसे अन्तिम पुस्तक है और नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पैग़मबरों में अन्तिम हैं तो अन्तिम इस्लाम धर्म के सिद्धांतों पर बात चीत करने और उन पर चर्चा करने के लिए सभी के लिए सदैव द्वार खोल रखा है | और इस्लाम धर्म के अंतर्गत आस्था की स्वतंत्रता की गारंटी है, (धर्म में कोई जोर जबरदसती नहीं है) तथा दूसरों के मान मर्यादा का सम्मान करते हुए किसी पर भी इस्लाम धर्म जो कि प्राकृति सत्य ईश्वरीय धर्म है स्वीकार केरने पर मजबूर नहीं किया जा सकता, इसी प्रकार इस्लाम गैर-मुसलमानों के साथ वाचाओं का सम्मान करता है तथा उन्हें पूरा करता है, साथ ही साथ अन्याय एवं विश्वासघात और प्रतिज्ञाभंग करने वालों के साथ बहुत सख्त तथा कड़ा है और ऐसे धोका देने वालों से मुसलमानों को मित्रता करने से रोकता है |

अल्लाह पाक ने फरमायाः

(إِنَّا أَنزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ بِمَا أَرَاكَ اللَّهُ ۚ وَلَا تَكُن لِّلْخَائِنِينَ خَصِيمًا(١٠٥)وَاسْتَغْفِرِ اللَّهَ ۖ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا (١٠٦) وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِينَ يَخْتَانُونَ أَنفُسَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَن كَانَ خَوَّانًا أَثِيمًا) سورة النساء: ١٠٥-١٠٧

अर्थः (निःसंदेह हमने तुम्हारी ओर सत्य शास्त्र उतारा है, ताकि तुम लोगों के बीच उसके अनुसार न्याय करो जिससे अल्लाह (तआ़ला) तुम्हें अवगत कराया है। और विश्वासघात करने वालों के पक्षधर न बनो। और अल्लाह (तआ़ला) से क्षमा माँगो, निःसंदेह अल्लाह (तआ़ला) क्षमाशील कृपानिधि है। और उनकी ओर से झगड़ा न करो जो स्वयं अपना ही विश्वासघात करते हैं। निःसंदेह धोखेबाज पापी अल्लाह (तआ़ला) को अच्छा नहीं लगता।) सूरह निसाः 105-107

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(لَّا يَنْهَاكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ لَمْ يُقَاتِلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَلَمْ يُخْرِجُوكُم مِّن دِيَارِكُمْ أَن تَبَرُّوهُمْ وَتُقْسِطُوا إِلَيْهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ) سورة الممتحنة: ٨

अर्थः (जिन लोगों ने तुम से धर्म के विषय में युद्ध नहीं किया तथा तुम्हें देश से नहीं निकाला, उनके साथ उत्तम व्यवहार एवं उपकार करने तथा न्यायपूर्ण व्यवहार करने से अल्लाह(तआ़ला) तुम्हें नहीं रोकता। (अपितु) निःसंदेह अल्लाह तो न्याय करने वालों से प्रेम करता है।) सूरह मुमतह्निह-8

पवित्र कुरआन में मुसलमानों से युद्ध करने वालों तथा उन्हें अपने घरों से निकालने वालों से मित्रता न करने के विषय में एक से अधिक स्थान पर स्पष्ट है।

अल्लाह पाक ने फरमायाः

(إِنَّمَا يَنْهَاكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ قَاتَلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَأَخْرَجُوكُم مِّن دِيَارِكُمْ وَظَاهَرُوا عَلَىٰ إِخْرَاجِكُمْ أَن تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَمَن يَتَوَلَّهُمْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ) سورة الممتحنة: ٨

अर्थः (अल्लाह (तआ़ला) तुम्हें केवल उन लोगों से प्रेम करने से रोकता है. जिन्होंने तुमसे धर्म के विषय में युद्ध किया तथा तुम्हें देश से निकाला एवं देश से निष्कासित करने वालों की सहायता की, जो लोग ऐसे काफिरों से प्रेम करें वही (निश्चित रूप से) अत्याचारी है |) सूरह मुमतहि्नह-9

इसी प्रकार कुरआन करीम ने एक से अधिक स्थान पर यह स्पष्ट किया है कि सारे यहूदी ताथ नसरानी दुशमन नहीं हैं. उन्में से कुछ सही आस्था वाले सदाचारी हैं, भलाई का आदेश देते हैं तथा पाप से रोकते हैं, और अच्छे कार्य एवं र्कमों का प्रयास करते हैं तो ऐसे लोगों का फल अल्लाह पाक कदापि नष्ट नहीं करेगा |

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(لَيْسُوا سَوَاءً ۗ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ أُمَّةٌ قَائِمَةٌ يَتْلُونَ آيَاتِ اللَّهِ آنَاءَ اللَّيْلِ وَهُمْ يَسْجُدُون(١١٣)يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنكَرِ وَيُسَارِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ وَأُولَٰئِكَ مِنَ الصَّالِحِينَ) سورة آل عمران: ١١٣-١١٤

अर्थः (यह सारे के सारे एक जैसे नहीं,बल्कि इन अहले किताब में एक गिरोह (सत्य पर) स्थिर भी है | जो रात्रि में अल्लाह की आयत पढ़ते एवं सजदः करते हैं | यह अल्लाह तथा महाप्रलय के प्रति विश्वास रखते हैं |

भलाईयों का आदेश देते और बुराईयों से रोकते हैं । तथा भलाई के कार्यों में शीघ्रता करते है यह सदाचारियों में से हैं ।) सूरह आले इमरान-113-114

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(وَإِنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَمَن يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْكُمْ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْهِمْ خَاشِعِينَ لِلَّهِ لَا يَشْتَرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۗ أُولَٰئِكَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ) سورة آل عمران: 199

अर्थः (और अवश्य अहले किताब में से भी कुछ लोग ऐसे हैं. जो अल्लाह (तआ़ला) पर ईमान लाते हैं और तुम्हारी ओर जो उतारा गया है और जो उनकी ओर उतारा गया हे उस पर भी । अल्लाह (तआ़ला) से डर करते हैं, और अल्लाह (तआ़ला) की आयतों को छोटे-छोटे मूल्यों पर नहीं बेचते । उनका बदला उनके पालानहार के पास है । निःसंदेह अल्लाह शीघ्र ही हिसाब लेने वाला है । सूरह आले इमरान-199

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالنَّصَارَىٰ وَالصَّابِئِينَ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ) سورة البقرة: ٦٢

अर्थः (अवश्य जो मुसलमान हो, यहूदी हो नसारा (इसाई) हो अथवा साबी (अधर्मी) हो, जो कोई भी अल्लाह (तआ़ला) एवं क़यामत के दिन पर ईमान लाएगा और सत्यकर्म करेगा उसका प्रतिफल उसके पालनहार के पास

है, और उनको न कोई भय है न कोई क्षोम होगा ।) सूरह बक़रह-62

5- इस्लाम विचार तथा मन के तर्क को मुख्य रूप देते हुए ब्रह्माण्ड एवं लोक पर चिंनतन करने को आमन्त्रित करता है ।

इस्लाम का उद्देश्य अन्ध विश्वास नहीं है और न ही इसकी ओर बुलाता है बल्कि सभी मानव को अल्लाह के चिन्हों तथा निशानियों और अनोखे, मनोहर रूप से अपनी रचनाओं के बनाने पर चिंतन करने का निमंत्रण देता है। पृथ्वी पर यात्रा करके लोगों को बुद्वि का प्रयोग करके विचार तथा चिंतन करने का अदेश देता है।

बल्कि इस्लाम धर्म अनेक बार संसार के चारों ओर तथा अपने आप में चिंतन करने का आज्ञा देता है, तथा चिंतन करने वाला व्यक्ति अवश्य उसका उत्तर पायेगा जिसके विषय में खोज करेगा, और अवश्य उसका दिल अल्लाह के अस्तित्व पर विश्वास करेगा, और उसे संपूर्ण सन्तोष तथा विश्वास प्राप्त हो जायेगा कि यह संसार एक विशेष उद्देश्य के निम्ति तथा विशेष प्रबंध से बनाया गया है और अन्तिम में वह उस परिणाम तक पहुँच जायेगा जिसकी ओर इस्लाम आवाहन करता तथा बुलाता है कि अल्लाह पाक के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं।

अल्लाह पाक ने शुभ कुरआन में फरमाया हैः

(الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ طِبَاقًا ۖ مَّا تَرَىٰ فِي خَلْقِ الرَّحْمَٰنِ مِن تَفَاوُتٍ ۖ فَارْجِعِ الْبَصَرَ هَلْ تَرَىٰ مِن فُطُورٍ (٣) ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنقَلِبْ إِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَهُوَ حَسِيرٌ) سورة الملك: ٣-٤

अर्थः (जिसने सात आकाश ऊपर-नीचे पैदा किये (हे देखने वाले !) अल्लाह दयावान की उत्पत्ति में कोई असमानता तथा विषमता न देखेगा. पुनः पलट के देख ले कि क्या कोई चीर भी दिखाई दे रही है। फिर दोहरा दो-दो बार देख ले, तेरी दृष्टि तेरी ओर हीन (तथा विवश) होकर थकी हुई लौट आयेगी।) सूरः मुल्क -3-4

और अल्लाह पाक ने फरमाया :

(سَنُرِيهِمْ آيَاتِنَا فِي الْآفَاقِ وَفِي أَنفُسِهِمْ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُ الْحَقُّ ۗ أَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ أَنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ) سورة فصلت: ٥٣

अर्थः (शीघ्र ही हम उन्हें अपनी निशानियाँ दुनिया के किनारों में भी दिखायेंगे तथा स्वयं उनके अपने अस्तित्व में भी, यहाँ तक कि उन पर खुल जाये कि सत्य यही है। क्या आपके रब एवं पालनहार का प्रत्येक वस्तु से अवगत होना पर्याप्त नहीं।) सूरः ह.मीम सजदः 53

और अल्लाह ने फरमाया :

(إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِي تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنفَعُ النَّاسَ وَمَا أَنزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِن مَّاءٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ

بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيهَا مِن كُلِّ دَابَّةٍ وَتَصْرِيفِ الرِّيَاحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ) البقرة: ١٦٤

अर्थः (निःसंदेह आकाश तथा धरती की रचना. रात दिन का फ़ेर बदल. और उन नवकाओं में जो समुंद्र में लोंगों के लिए लाभदायक सामग्री ले कर चलती हैं. और उस वर्षा में जिसे अल्लाह आकाश से भेजता है. और जिसके द्वारा वह बंजर भूमि में जान डालता है. और जिस भूमि पर अल्लाह ने हर प्रकार के जानवरों को फैला दिया है. और हवाओं का दिशा बदलने में. और उस बादल में जिसे अल्लाह आकाश और धरती के बीच वशी भूत किये होता है. बुद्धिमानों के लिए बहुत सारी निशानियाँ हैं ।) सूरः बक़रः-164

और अल्लाह पाक ने फरमाया :

(وَسَخَّرَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ وَالنُّجُومُ مُسَخَّرَاتٌ بِأَمْرِهِ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ) سورة النحل:١٢

अर्थः (दिन,रात्रि और सूर्य तथा चंद्र को अपने आदेश पर चलने वाला बना दिया, और तारे भी उसके हुक्म पर चलने वाले हैं निःसंदेह इन सभी बातों में उन लोगों के निशानियाँ है जो बुद्धि वाले हैं) सूरः नह्‌ल-12

और अल्लाह पाक ने फरमाया :

(وَالسَّمَاءَ بَنَيْنَاهَا بِأَيْدٍ وَإِنَّا لَمُوسِعُونَ) سورة الذاريات:٤٧

अर्थः (तथा अकाश को हमने अपने हाथों से बनाया है, और निःसंदेह हम विस्तार करने वाले हैं ।) सूरः ज़ारियात-47

और अल्लाह पाक ने फरमाया :

(وَأَنزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ فَأَسْكَنَّاهُ فِي الْأَرْضِ ۖ وَإِنَّا عَلَىٰ ذَهَابٍ بِهِ لَقَادِرُونَ (١٨) فَأَنشَأْنَا لَكُم بِهِ جَنَّاتٍ مِّن نَّخِيلٍ وَأَعْنَابٍ لَّكُمْ فِيهَا فَوَاكِهُ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ) سورة المؤمنون:١٩

अर्थः (तथा हम एक उचित मात्रा में आकाश से जल बरसाते हैं, फिर उसे धरती के ऊपर रोक देते हैं. तथा हम उसके लेजाने पर निश्चियतः सामर्थवान हैं, इसी पानी के द्वारा हम तुम्हारे लिए खजूरों तथा अंगूरों के बाग उपजा देते हैं कि तुम्हारे लिए उन से मेवे एवं फल होते हैं. उन्हीं में से तुम खाते भी हो।) सूरः मोमिन-19

और अल्लाह ने फरमाया :

(أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَلَكَهُ يَنَابِيعَ فِي الْأَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ثُمَّ يَهِيجُ فَتَرَاهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُهُ حُطَامًا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرَىٰ لِأُولِي الْأَلْبَابِ) سورة الزمر:٢١

अर्थः (क्या आपने नहीं देखा कि अल्लाह (तआ़ला) आकाश से पानी वर्षाता है तथा उसे धरती के सोतों में पहुँचाता है फिर उसी के द्वारा विभिन्न प्रकार की खेतियाँ उगाता है, फिर वे सूख जाती हैं तथा आप उन्हें पीले रंग में देखते हैं फिर उन्हें चूरा-चूरा कर देते हैं । इसमें बुद्धिमानों के लिए अत्याधिक शिक्षा है ।) सूरः ज़मर-21

और अल्लाह ने फरमायाः

(أَوَلَمْ يَرَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنَاهُمَا ۖ وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَاءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ۖ أَفَلَا يُؤْمِنُونَ) سورة الأنبياء:٣٠

अर्थः (क्या काफिरों ने यह नहीं देखा कि (ये) आकाश तथा धरती (सब के सब) आपस में मिले हुये थे, फिर हमने उन्हें अलग-अलग किया और हर जीवित को हमने पानी से पैदा किया. क्या यह लोग फिर भी विशवास नहीं करते ।) सूरः अम्बिया-30

और अल्लाह ने फरमाया :

(وَجَعَلْنَا فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَن تَمِيدَ بِهِمْ وَجَعَلْنَا فِيهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ) سورة الأنبياء:٣١

अर्थः (और हमने धरती पर पर्वत बना दिये. ताकि वह सृष्टि को हिला न सके । और हमने इसमें उनके बीच विस्तृत मार्ग बना दिये । ताकि वह मार्ग प्राप्त कर सकें ।) सूरः अम्बिया-31

और अल्लाह ने फरमाया :

(وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِن سُلَالَةٍ مِّن طِينٍ (١٢) ثُمَّ جَعَلْنَاهُ نُطْفَةً فِي قَرَارٍ مَّكِينٍ (١٣) ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظَامًا فَكَسَوْنَا الْعِظَامَ لَحْمًا ثُمَّ أَنشَأْنَاهُ خَلْقًا آخَرَ ۚ فَتَبَارَكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ (١٤) ثُمَّ إِنَّكُم بَعْدَ ذَٰلِكَ لَمَيِّتُونَ) سورة المؤمنون: ١٢-١٥

अर्थः (तथा निःसंदेह हमने मनुष्य को खनखनाती मिट्टी के सार से उत्पन्न किया. फिर उसे वीर्य बना कर सुरक्षित स्थान में रख दिया. फिर वीर्य को हमने जमा हुवा रक्त बना दिया, फिर उस रक्त को लोथड़े के माँस का टुकड़ा बना दिया, फिर माँस के टुकड़े में अस्थियाँ बनायीं, फिर अस्थियों को माँस पहना दिया | फिर मैं ने उसे अन्य रूप में उत्पन्न कर दिया | मंगलमय है वह अल्लाह जो सबसे अच्छी उत्पत्ति करने वाला है |) सूरः मोमिनून -12,13,14

और अल्लाह ने फरमाया :

(يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِن كُنتُمْ فِي رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَإِنَّا خَلَقْنَاكُم مِّن تُرَابٍ ثُمَّ مِن نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِن مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ۚ وَنُقِرُّ فِي الْأَرْحَامِ مَا نَشَاءُ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوا أَشُدَّكُمْ ۖ وَمِنكُم مَّن يُتَوَفَّىٰ وَمِنكُم مَّن يُرَدُّ إِلَىٰ أَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِن بَعْدِ عِلْمٍ شَيْئًا ۚ وَتَرَى الْأَرْضَ هَامِدَةً فَإِذَا أَنزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَاءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ وَأَنبَتَتْ مِن كُلِّ زَوْجٍ بَهِيجٍ) سورة الحج:٥

अर्थः (ऐ लोगो ! यदि तुम्हें मरने के पश्चात जीवित होने में संदेह है, तो सोचो हमने तुम्हें मिट्टी से पैदा कि, फिर वीर्य से. फिर रक्त के ढक्के से, फिर मांस के लोथड़े से जो रूप दिया गया था तथा बिना चित्र था | यह हम तुम पर स्पष्ट कर देते हैं तथा हम जिसे चाहें एक निर्धारित समय तक माता के गर्भ में रखते हैं तथा तुम्हें शिशु के रूप में संसार में लाते हैं, ताकि तुम अपने पूर्ण युवन को पहुँचो, तुम में से कुछ वे हैं जो मर जाते हैं तथा कुछ जीर्ण आयु की ओर फिर से लौटा दिये जाते हैं कि वह

एक वस्तु से परिचित होने के पश्चात पुनः अपरिचित हो जाये । तुम देखते हो कि धरती बंजर तथा सूखी है, फिर जब हम उस पर वर्षा करते हैं, तो वह उभरती है तथा फूलती है और हर प्रकार की सुन्दर वनस्पति उगाती है ।) सूरः हज्ज-5

और अल्लाह ने फरमाया :

(اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَق) سورة العلق: ١

अर्थः (अपने अल्लाह का नाम लेकर पढ़ जिसने पैदा किया ।) सूरः अ़लक़्-1

और अल्लाह ने फरमाया :

(أَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ آنَاءَ اللَّيْلِ سَاجِدًا وَقَائِمًا يَحْذَرُ الْآخِرَةَ وَيَرْجُو رَحْمَةَ رَبِّهِ ۗ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۗ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ) سورة الزمر:٩

अर्थः (भला वह व्यक्ति जो रातों के समय सज्दह एवं खड़े होने की स्थिति में उपासना करता हो, आखिरत से डरता हो तथा अपने रब एवं पालनहार की दया की आशा रखता हो (तथा वह जो उसके विपरीत हों समान हो सकते हैं). बताओ तो ज्ञानी तथा अज्ञानी क्या समान हो सकते हैं ? निःसंदेह शिक्षा वही ग्रहण करते हैं जो बुद्धिमान हों ।) सूरह जुमर-9

और अल्लाह ने फरमाया :

(وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَابِّ وَالْأَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ كَذَٰلِكَ ۗ إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ غَفُورٌ) سورة فاطر:٢٨

अर्थः (तथा इसी प्रकार मनुष्यों तथा जानवरों एवं चौपायों में भी कुछ ऐसे हैं कि उनके रंग भिन्न हैं | अल्लाह से वही भक्त डरते हैं जो ज्ञान रखते हैं | वास्तव में अल्लाह अत्यन्त महान क्षमा करने वाला है |) सूरः फातिर-28

6- इस्लाम मानव को मूल पाप के बोझ से छुटकारा तथा मुक्ति दिलाता है |

हर बच्चा बिना पाप के पैदा होता है, निःसंदेह अपने पालनहार तथा रब की अवज्ञा करने के बाद दादा आदम के पश्चाताप का स्वीकार होना मानवता के लिए पहला पाठ था कि विश्पालक (रब) पश्चाताप स्वीकार करके क्षमा प्रदान करता है, प्रत्येक व्यक्ति अपने अपने पाप का उत्तरदायी है |

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهِينَةٌ) سورة الدهر: ٣٨

अर्थः (प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों के बदल गिरवी है) सूरःमुद्दस्सिर-38

यही अल्लाह पाक का न्याय है, निश्चित रूप से किसी भी मनुष्य का लेखा जोखा ऐसे पाप के प्रति नहीं होगा जो उसने न किया हो, इसी प्रकार बिना अपने ईमान तथा सत्य कर्म के वह छुटकारा तथा मुक्ति भी प्राप्त नहीं कर सकता, अल्लाह ने मानव को जीवन प्रदान किया तथा उसे परिक्षा और परिक्षण चुनने की

स्वतंत्रता दी और वह केवल अपने कार्यों का उत्तरदायी तथा जिम्मेदार है ।

अल्लाह ने फरमाया :

(وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۚ وَإِن تَدْعُ مُثْقَلَةٌ إِلَىٰ حِمْلِهَا لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَيْءٌ وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۗ إِنَّمَا تُنذِرُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ ۚ وَمَن تَزَكَّىٰ فَإِنَّمَا يَتَزَكَّىٰ لِنَفْسِهِ ۚ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ) سورة فاطر: ١٨

अर्णः (कोई भी बोझ उठाने वाला दूसरों का बोझ नहीं उठायेगा तथा यदि कोई भारी बोझ वाला अपना भार उठाने के लिए किसी अन्य को बुलायेगा. तो वह उसमें से कुछ भी न उठा सकेगा चाहे निकट सम्बन्धी ही क्यों न हो । तुम केवल उन्हीं को सावधान कर सकते हो जो बिन देखे ही अपने रब से डरते हैं तथा नमाज़ नियमित रूप से पढ़ते हैं, और जो पवित्र होगा । तथा लौटना अल्लाह ही की ओर है ।) सूरःफ़ातिर-18

सहीह बुखारी में है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमाया : ((प्रत्येक बच्चा इस्लाम की प्रकृति पर पैदा होता है, अतः उसके माता पिता उसे यहूदी या नसरानी या मजूसी (आग का पुजारी) बना देते हैं ।))

7- इस्लाम मनुष्य को सद्धा में रखता तथा ब्रह्मांड के साथ सेता है ।

ब्रह्मांड तथा जगत की प्रत्येक रचनायें पैदा करने वाले की पवित्रता बयान करती और उसी की प्रशंसा करती हैं, जब इस्लाम पैदा करने वाले तथा मनुष्य के बीच संबन्ध खोलता है, तो वह मनुष्य तथा उसके रब एवं पालनहार के बीच सहज संबन्ध स्थापित करता है और उसे रब तक पहुँचाने वाले उचित मार्ग का निर्देशन करता है।

अल्लाह पाक ने फरमाया :।

(أَفَغَيْرَ دِينِ اللَّهِ يَبْغُونَ وَلَهُ أَسْلَمَ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا وَإِلَيْهِ يُرْجَعُونَ) سورة ال عمران: ٨٣

अर्थः (क्या वह अल्लाह के धर्म के अतिरिक्त किसी अन्य धर्म की खोज में हैं जब कि सभी आसमान वाले और धरती वाले, अल्लाह के अज्ञाकारी हैं। स्वेच्छा से हों और दबाव से हों तो सभी को उसकी ओर लौटाया जायेगा) सूरः आले-मरान-83

(وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا وَظِلَالُهُم بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ) سورة الرعد: ١٥

अर्थः (तथा अल्लाह ही के लिए आकाशों तथा धरती के सभी जीव प्रसन्नता तथा अप्रसन्नता से सिजदः (दण्डवत) करते हैं तथा उनकी छाँय भी प्रातः एवं संझया) सूरः रअ़द-15

8- इस्लाम नैतिक शुद्धता तथा शालीनता एवं लज्जता का आहवान करता है ।

ऐसे समय में जब नैतिक मूल्यों में गिरावट आ रही है तथा पारिवारिक जीवन भंग हो गया है, कुरआन ने कई दीवारें खडी किया जो इन समस्याओं का समाधान करते हैं ।

अल्लाह पाक ने फरमायाः

(يَا بَنِي آدَمَ قَدْ أَنزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُوَارِي سَوْآتِكُمْ وَرِيشًا ۖ وَلِبَاسُ التَّقْوَىٰ ذَٰلِكَ خَيْرٌ ۚ ذَٰلِكَ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ) سورة الأعراف:٢٦

अर्थः (हे आदम के पुत्रों हम ने तुम्हें ऐसा वस्त्र प्रदान किया जो तुम्हारे गुप्तांग को ढांके तथा शोभा दे एवं संयम (परहेज़गारी) का वस्त्र ही उत्तम है, यह अल्लाह की निशानियां हैं ताकि वह स्मरण करें) सूरः आराफ-36

अल्लाह पाक ने फरमायाः

(قُل لِّلْمُؤْمِنِينَ يَغُضُّوا مِنْ أَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوا فُرُوجَهُمْ ۚ ذَٰلِكَ أَزْكَىٰ لَهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا يَصْنَعُونَ (٣٠) وَقُل لِّلْمُؤْمِنَاتِ يَغْضُضْنَ مِنْ أَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوجَهُنَّ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا ۖ وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلَىٰ جُيُوبِهِنَّ ۖ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا لِبُعُولَتِهِنَّ أَوْ آبَائِهِنَّ أَوْ آبَاءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ أَبْنَائِهِنَّ أَوْ أَبْنَاءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِي إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِي أَخَوَاتِهِنَّ أَوْ نِسَائِهِنَّ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ أَوِ التَّابِعِينَ غَيْرِ أُولِي الْإِرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ أَوِ الطِّفْلِ الَّذِينَ لَمْ يَظْهَرُوا عَلَىٰ عَوْرَاتِ النِّسَاءِ ۖ وَلَا يَضْرِبْنَ بِأَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِينَ مِن زِينَتِهِنَّ ۚ وَتُوبُوا إِلَى اللَّهِ جَمِيعًا أَيُّهَ الْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ) سورة النور:٣١

अर्थः (मुसलमान पुरूषों से कहो कि अपनी दृष्टि (निगाहें) नीची रखें तथा अपने गुप्ताँग की सुरक्षा करें | यही उनके लिए पवित्रता है, लोग जो कुछ कर रहे हैं अल्लाह पाक सबसे अवगत है | तथा मुसलमान स्त्रियों से कहो कि वे भी अपनी दृष्टि (निगाहें) नीची रखें तथा अपने सतीत्व की रक्षा करें | और अपनी शोभा का प्रदर्शन नकरें सिवाय उसके जो प्रकट है | तथा अपने गरेबान एवं छाती पर अपनी ओढ़नियों को पूर्णरूप से फैलाये रहें तथा अपनी शोभा का प्रदर्शन किसी के सामने न करें. सिवाय अपने पतियों के, अथवा अपने पिता के अथवा अपने ससुर के अथवा अपने पुत्रों के अथवा अपने पति के पुत्रों के अथवा अपने भाईयों के अथवा अपने भतीजों के अथवा अपने भाँजों के अथवा अपने सखियों के अथवा दासों के अथवा नौकरों में ऐसे पुरुष के जिनको कामुकता न हो अथवा ऐसे बच्चों के जो स्त्रियों के पर्दे की बातों के विषय में न जानते हों, तथा इस प्रकार से जोर-जोर से पैर मार कर न चलें कि उनके छुपे सिंगार का पता लग जाये | तथा हे मुसलमानों ! तुम सब के सब अल्लाह से क्षमा माँगो ताकि तुम मोक्ष पाओ |) सूरह नूर -31

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُل لِّأَزْوَاجِكَ وَبَنَاتِكَ وَنِسَاءِ الْمُؤْمِنِينَ يُدْنِينَ عَلَيْهِنَّ مِن جَلَابِيبِهِنَّ ۚ ذَٰلِكَ أَدْنَىٰ أَن يُعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا)
الأحزاب:٥٩

अर्थः (हे नबी ! अपनी पत्नियों से तथा अपनी पुत्रियों से तथा मुसलमानों की महिलाओं से कह दो कि वह अपने ऊपर अपनी चादरें लटका लिया करें इससे तुरन्त उनकी पहचान हो जाया करेगी फिर कष्ट न पहुँचायी जायेंगी, तथा अल्लाह पाक अत्यन्त क्षमाशील एवं दायालू है ।) सूरःअह्ज़ाब-59

9- इस्लाम संतुलन, संयम, तथा सहिष्णुता पर आधारित धर्म है ।

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِّتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا ۗ وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِي كُنتَ عَلَيْهَا إِلَّا لِنَعْلَمَ مَن يَتَّبِعُ الرَّسُولَ مِمَّن يَنقَلِبُ عَلَىٰ عَقِبَيْهِ ۚ وَإِن كَانَتْ لَكَبِيرَةً إِلَّا عَلَى الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ ۗ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِيعَ إِيمَانَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ) سورة البقرة: ١٤٣

अर्थः (तथा हमने इसी प्रकार तुम्हें मध्यम एवं संतुलित समुदाय बनाया है ताकि तुम लोगों पर साक्षी हो जाओ और रसूल (सल्लल्लाह अ़लैहि वसल्लम) तुम पर साक्षी होजायें, जिस किबले पर तुम पूर्व से थे, उसे हमने केवल इस लिए निर्धारित किया था कि हम जान लें कि रसूल के सच्चे अनुयायी कौन-कौन हैं तथा कौन है जो अपनी एड़ियों के बल पलट जाता है । यधपि यह कार्य कठिन है, प्रन्तु जिन्हें अल्लाह ने मार्ग दर्शन प्रदान किया है (उन पर कोई कठिनाई नहीं) अल्लाह पाक तुम्हारा ईमान नष्ट

नहीं करेगा, अल्लाह पाक लोगों के साथ प्रेम तथा कृपा करने वाला है ।) सूरः बक़रः-143

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ) سورة الكافرون:٦

(तुम्हारे लिये तुम्हारा धर्म है तथा मेरे लिये मेरा धर्म है।) सूरः काफ़िरून-6

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(يَا بَنِي آدَمَ خُذُوا زِينَتَكُمْ عِندَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا وَلَا تُسْرِفُوا ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ) سورة الأعراف:٣١

अर्थः (हे आदम के पुत्रों ! मस्जिद में जाने के प्रत्येक समय अपना वस्त्र अपना लो तथा खाओ-पिओ और अपव्यय (अनावश्यक खर्च) न करो । निःसन्देह जो अपव्यय करते हैं अल्लाह उनसे प्रेम नहीं करता) । सूरःआराफ़-31

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُولَةً إِلَىٰ عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُومًا مَّحْسُورًا) سورة الإسراء: ٢٩

(तथ अपना हाथ अपनी गर्दन से बँधा हुआ न रख तथा न उसे पूर्णरूप से खोल दे कि फिर धिक्कारा हुआ तथा पछताया बैठ जाये ।)सूरःबनी इस्राईल-29

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(قُلْ يَا عِبَادِيَ الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا مِن رَّحْمَةِ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا ۚ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ) سورة الزمر: ٥٣

अर्थः (हे नबी ! मेरी ओर से) कह दो कि हे मेरे बन्दो जिन्होंने अपने प्राणों पर अत्याचार किये हैं तुम अल्लाह की कृपा से निराश न हो जाओ, निःसन्देह अल्लाह समस्त पापों को क्षमा कर देता है | वास्तव में वह अत्यन्त क्षमाशील अत्यन्त कृपालु है |) सूरःज्जुमर -53

और जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमायाः **((अल्लाह उस दास पर दया करे जो कयविकय तथा करज़ वापस लेने के समय कोमलता करे |))** सहीह बुखारी

10- इस्लाम में अल्लाह की दया से निराशा नहीं है |

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ) سورة النمل:٣٠

अर्थः (अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यंत कृपालू एवं दयालू है |) सूरः नमल-30

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(قُلْ يَا عِبَادِيَ الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا مِن رَّحْمَةِ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا ۚ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ) سورة الزمر: ٥٣

अर्थः (हे नबी ! मेरी ओर से) कह दो कि हे मेरे बन्दो ! जिन्होंने ओने प्रणाों पर अत्याचार किये हैं तुम अल्लाह की कृपा से निराश न हो जाओ, निःसंदेह अल्लाह समस्त पापों को क्षमा कर देता है । वास्तव में वह अत्यन्त क्षमाशील अत्यन्त कृपालू है ।) सूरः जुमर-53

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَادْعُوهُ خَوْفًا وَطَمَعًا ۚ إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِينَ) سورة الأعراف: ٥٦

अर्थः (तथा धरती में सुधार के पश्चात बिगाड़ न उत्पन्न करो एवं भय तथा आशा के साथ उसकी आराधना करो, निश्चय अल्लाह की दया सदाचारियों से निकट है ।) सूरः आराफ़-56

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(وَإِذَا جَاءَكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِنَا فَقُلْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ ۖ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلَىٰ نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۖ أَنَّهُ مَنْ عَمِلَ مِنكُمْ سُوءًا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِن بَعْدِهِ وَأَصْلَحَ فَأَنَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ) سورة الأنعام:٥٤

अर्थः (तथा आप के पास जब वह लोग आयें जो हमारी आयतों के प्रति विश्वास रखते हैं तो कह दीजिये, तुम सुरक्षित रहो । तुम्हारे पालनहार ने अपने ऊपर कृपा अनिवार्य कर लिया है । कि तुम में से जिसने मूर्खता से दुराचार कर लिया फिर तत्पश्चात क्षमा-याचना एवं

सुधार कर लिया तो अल्लाह क्षमाशील कृपालु है ।) सूरः अनआ़म-54

अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने बयान किया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमायाः ((जब अल्लाह ने सृष्टि को पैदा करना प्रारम्भ किया तो उसने अपनी किताब में लिखा तथा वह किताब उसके पास अ़र्श पर है किः निःसंदेह मेरी दया मेरे प्रकोप से पहले है ।)) सही बुखारी- सही मुस्लिम

11- इस्लाम समानता,एकता तथा जातीय भेदभाव के विरुद्ध लड़ने का आहवान करता है

अल्लाह पाक ने मनुष्य को अनेक रचनाओं पर सम्मानित किया है तथा उसने सभी जातियों तथा वंशों के बीच समानता का आहवान किया है ।

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِي آدَمَ وَحَمَلْنَاهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنَاهُم مِّنَ الطَّيِّبَاتِ وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَىٰ كَثِيرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيلًا) سورة الإسراء:٧٠

अर्थः (तथा निःसंदेह हमने आदम की संतान को बड़ा सम्मान दिया तथा उन्हें थल एवं जल की सवारियाँ दी, और उन्हें पवित्र वस्तुओं से जीविका प्रदान की, तथा अपने बहुत सी सृष्टि पर उन्हें श्रेष्ठता प्रदान की ।) सूरः बनी इस्राईल-70

इस्लाम में मान और सम्मान का संतुलन धार्म निष्ठता और धार्मिकता पर आधारित है |

(يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاكُم مِّن ذَكَرٍ وَأُنثَىٰ وَجَعَلْنَاكُمْ شُعُوبًا وَقَبَائِلَ لِتَعَارَفُوا ۚ إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِندَ اللَّهِ أَتْقَاكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ) الحجرات: ١٣

अर्थः (हे लोगो ! हमने तुम्हें एक (ही) पुरुष तथा स्त्री से जन्म दिया है, तथा तुम आपस में एक-दूसरे को पहचानो इस लिए जातियँ तथा प्रजातियाँ बना दी हैं, अल्लाह की दृष्टि में तुम सब में वह सम्मानित है जो सबसे अधिक डरने वाला है | विश्वास करो कि अल्लाह जानने वाला भली-भाँति परिचित है|) सूरःहुजुरात-13

अल्लाह के रसूल रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : ((हे लोगो !वास्तव में तुम्हारा रब एवं पालनहार एक ही है, तथा तम्हारे पिता (आदम अ़लैहिस्सलाम) एक ही है,सावधान! किसी अरबी को ग़ैर अरबी पर तथा किसी ग़ैर अरबी को अरबी पर, किसी गोरे को किसी काले पर, किसी काले को किसी गोरे पर कोई प्रमुख्ता बिल्कुल नहीं है, सिवाय धर्म निष्ठा के अधार पर) मुसनद अहमद

थोड़ा ध्यान दें !

इसलाम में अनेक इस्लामिक एवं धार्मिक अनुष्ठानों में एकता तथा समानता के सिद्धांतों पर ज़ोर दिया गया है |

1- नमाज मेंः बिना किसी अन्तर तथा जातिवाद, संप्रदाय आदि के भेद भाव सभी मुसलमान एक दूसरे के साथ एक ही पंक्ति में खड़े होते हैं।

2- इस्लाम ने गुलामी से स्वातंत्रता का आवाहन किया तथा इसे अनेक पापों के नष्ट तथा प्रायश्चित का साधन बनाया।

3- सारे मुसलमान हज्ज में बिना किसी भेद भाव तथा समाजी अन्तर के एक ही स्थान तथा एक ही समय एक ही रंग के वस्त्र पहन कर एकत्रित होते हैं, और आपस में मेल मुहब्बत के साथ हज्ज करते हैं। वहाँ किसी प्रकार का कोई समाजिक मतभेद नहीं होता।

अल्लाह पाक ने कअ़बा -मस्जिदे ह़राम- को पूजा (इबादत) के लिए पहला घर और मोमिनों एवं विश्वासियों की एकता का प्रतीक बनाया, जिसकी ओर मुंह करके सारे मुसलमान नमाज़ पढ़ते तथा पृथ्वी भर से वृत्त (सर्कल) बनाते हैं, और इसका केंद्र मक्कह है। मुसलमान उसके चारों ओर परिक्रमा करते हैं जैसे उलटी दक्षिणावर्त ब्रहमांड की रफतार के साथ एक सामंजस्यपूर्ण तथा सूर्य के चारों ओर अपनी घेरे में ग्रहण, और इलेक्ट्रानो परमाणु के चारों ओर चलता है और मानव शरीर में रक्त सामंजस्यपूर्ण के गति चलता है।

कुरआन में अनेक ऐसे दृश्य पाये जाते हैं जिस में उपासकों के प्रकृति गतिविधियों का खुलासा है. जैस पैगंबर दाऊद के साथ पहाड़ों और पंक्षियों का प्रशंसा करना तथा गुण गाना । (हे पर्वतों, उसके साथ में सरूचित महिमागान किया करो तथा पक्षियों को भी (यही आदेश है |)) सूरः सबा-10

इस्लाम ने कई स्थानों में स्पष्ट किया है कि सारा ब्रह्मांड तथा उसमें पायी जाने वाली सभी रचनायें अल्लाह पलनहार की प्रशंसा करती हैं ।

निःसंदेह भुमि मणडल की प्रकृति तथा उसका अपने चारों ओर घूमना जिसके कारण रात-दिन का अना जाना उत्पन्न होता है. और मुसलमानों का कअ़बा के चारों ओर परिक्रमा करना तथा मक्कह के ओर मुंह करके पृथ्वी के विभिन्न भागों से दिन भर में पांच बार नमाज़ पढ़ना, और एक स्थायी और निरंतर महिमा में ब्रह्मांड व्यवस्था का भाग है जिस में सदैव अल्लाह की प्रशंस का आपसी जोड है ।

12- इस्लाम स्वतंत्रता का धर्म है

आस्था तथा धर्म चुनने में स्वतंत्रता ।

सबसे महत्वपूर्ण अधिकार में से एक जो इस्लाम मनुष्य को गारंटी देता है वह है धर्म तथा आस्था के चुनने की स्वतंत्रता ।

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(لَا إِكْرَاهَ فِي الدِّينِ ۖ قَد تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ ۚ فَمَن يَكْفُرْ بِالطَّاغُوتِ وَيُؤْمِن بِاللَّهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ لَا انفِصَامَ لَهَا ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ) سورة البقرة: ٢٥٦

अर्थः (धर्म के विषय में कोई दबाव नहीं सत्य-असत्य से अलग हो गया इस लिए जो व्यक्ति अल्लाह (तआला) के अतिरिक्त अन्य देवताओं को नकार कर अल्लाह (तआला) पर ईमान लाये उसने मज़बूत कड़े को थाम लिया जो कभी भी न टूटेगा, और अल्लाह (तआला) सुननेवाला जाननेवाला है ।) सूरः बक़रह- 256

गुलामी से लड़ाई

इस्लाम से पहले लोगों के बीच गुलामी, बिना किसी प्रतिबन्ध के एक स्थायी प्रणाली तथा व्यवस्था था, अतः जो लोग ऋण नहीं अदा कर पाते वे खुद बखुद तथा स्वचालित रूप से ऋण देने वाले के गुलाम हो जाते, इसी प्रकार युद्ध के क़ैदी भी सीधे खुद बखुद तथा स्वचालित रूप से गुलाम हो जाते, और कुछ देशों एंव क्षेत्रों में जानवर के प्रकार गुलोमों का शिकार किया जाता था, तिजारती सामानों के रूप गुलामों का व्यपार किया जाता था,बल्कि यह कार्य हज़ारों लोगों के जीविका का साधन होता था, खासकर अभिजात वर्ग के लिए, यहां तक कि

क़ैदियों की संख्या परिवार की संपत्ति स्थिति तथा शक्ति का प्रतीक समझा जाता था।

निःसंदेह इस्लाम गुलामी के इस प्रणाली को बल प्रयोग करके खत्म कर सकता था, प्रन्तु इस से नफरत तथा दुश्मनी पैदा होती अथवा गुलाम व्यापार के बड़े हिस्से पर आधारित अर्थव्यवस्था के ढाने का कारण होता, लेकिन गुलामी के खिलाफ इस्लाम की लड़ाई का उद्देश्य पूरे समाज के दृष्टिकोण तथा मानसिकता को बदलना था, ताकि प्रदर्शनों. हमलों, सविनय अवज्ञा या जातीय क्रांतियों का सहारा लेने की आवश्यकता के बिना गुलाम मुक्ति के बाद समाज के पूर्ण सक्रिय सदस्य बन जायें।

निःसंदेह इस्लाम तलवारों या रक्तपात का सहारा लिए बिना गुलामी के स्रोतों को सुखाने में सक्षम रहा तथा उसी समय प्रत्येक प्रकार के गुलामी को रोकने में सफल रहा।

इसलम से पूर्व गुलामी के सूत्र निम्न प्रकार थे !

- युद्धों के क़ैदी जो सीधे गुलाम बना लिए जाते थे।

- अपने अधिकार के आधार पर शासक तथा राजा का अपनी प्रजा में से अपनी इच्छा द्वारा गुलाम बना लेना।

- पिता या दादा तथा जिसके पास अपनी संतानों पर पूर्ण शक्ति प्राप्त हो वह उनमें से किसी को बेच सकता था

या उपहार दे सकता था, या अपने कर्ज भुगतान करने के लिए अपने संतान में से जिसे चाहता दूसरे के साथ बदल सकता था।

इस्लाम ने अन्तिम दोनों सूत्रों को पूर्ण रूप से सुखा दिया, अतः किसी शासक को अपने प्रजा के प्रति गुलाम बनाने की कोई अनुमति नहीं दी, और इस्लाम ने शासक और शासित दोनों को स्वतंत्रा तथा न्याय की सीमा के भीतर अधिकार दिया है, साथ ही साथ इस्लाम ने गुलाम बनाने के पहले स्रोत में ऐसा प्रतिबंध लगा दिया है कि युद्ध के कैदियों के साथ वही सुभाव किया जाये जो दुश्मनों के साथ होता है, यधपि अंत में धीरे धीरे गुलाम को मुक्ति के माध्यम से जलदी मुक्त कर दिया जाता है चाहे प्रायशिचत से या अल्लाह से करीब होन के लिए सदका तथा दान से या भलाई में जल्दी करते हुए गर्दन आजाद करने के माध्यम से।

जब पशिचमी देशों ने औपनिवेशिक लड़ाई लड़ी थी तो युद्ध गुलामी का प्राथमिक स्रोत था, जबकि इस्लाम ने केवल धर्म, आत्म और धन की रक्षा में युद्ध की अनुमति दी है।

उन युद्धों में जिनमें मुसलमान युद्ध करने पर मजबूर कर दिए गये अल्लाह के पैगंबर अपने साथियों को जहाँ कैदियों के साथ शुभ व्यवहार करने का आदेश देते थे

वहीं पर कैदियों के लिए यह भी संभव था कि पैसे देकर या बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाकर अपनी स्वतंत्रता प्राप्त कर सकते थे, इसी प्रकार इस्लाम में कैदियों के व्यवस्था ने बच्चे को अपनी माता से या पत्नी को अपने पति से या भाई को अपने भाई से वंचित नहीं किया।

इसी प्रकार इस्लाम ने प्रायशिचत (कफ्फारात) में गर्दन की मुक्ति को वैध करके गुलामों को मुक्त करने के लिए एक बहुत बड़ा अभियान चलाया है।

इसका एक उदाहरण यह है कि जब उपवास करने वाला एवं रोज़ा रखने वाला व्यक्ति रमाज़ान के दिन में बिना किसी वैध बहाने के अपनी पत्नी से संभोग कर ले तो उसे कुछ मामलों में गर्दन मुक्त करना होगा, इसके अतिरिक्त दूसरे दिन रोज़ा की क्षतिपूर्ति करनी होगी। इसी प्रकार गलती से हत्या, या कसम. ज़ेहार जैसे अन्य प्रायश्चितों मे गुलाम मुक्त करना है।

इस्लाम का लक्ष्य इस घृणित व्यवस्था से जल्द से जल्द तथा साधनों से मुक्ति तथा छुटकारा पाना है, अतः वह महिला जो अपने मालिक के लिये जन्म देदे बेची नहीं जा सकती तथा अपने मालिक के मृत्यु होते ही स्वतत्रता पा जाती थी। और पिछली सभी परंपरा के विपरीत इस्लाम ने यह निर्धारित किया है कि गुलाम महिला का बेटा अपने पिता के साथ शामिल होकर स्वंतत्र हो

जायेगा । इसी प्रकार गुलाम अपने मालिक को कुछ पैसे देकर या कुछ नियुक्त समय काम के बदले अपने आप को स्वयं खरीद सकता है ।

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(وَالَّذِينَ يَبْتَغُونَ الْكِتَابَ مِمَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوهُمْ إِنْ عَلِمْتُمْ فِيهِمْ خَيْرًا ۖ وَآتُوهُم مِّن مَّالِ اللَّهِ الَّذِي آتَاكُمْ ۚ وَلَا تُكْرِهُوا فَتَيَاتِكُمْ عَلَى الْبِغَاءِ إِنْ أَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوا عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَن يُكْرِههُّنَّ فَإِنَّ اللَّهَ مِن بَعْدِ إِكْرَاهِهِنَّ غَفُورٌ رَّحِيمٌ) سورة نور: ٣٣

अर्थः (तुम्हारे दासों में से जो कोई तुम्हें कुछ देकर स्वाधीनता लेख कराना चाहे तो तुम उन्हें ऐसा लेख दे दिया करो यदि तुमको उनमें कोई भलाई दिखती हो । तथा अल्लाह ने जो माल तुम्हें दे रखा है, उसमें से उन्हें भी दो । तुम्हारी दासियाँ जो पवित्र रहना चाहती हैं, उन्हें सांसारिक जीवन के लाभ के कारण कुकर्म पर बाध्य न करो । तथा जो उन्हें बाध्य कर दे तो अल्लाह पाक उनके विवश किये जाने के पश्चात क्षमा कर देने वाला तथा कृपा करने वाला है ।) सूरः नूर-33

तो जब भी दास को अपने आप को स्वंत्रत करने की इच्छा हो तो उसके लिए अनुभव है कि अपने मालिक से एक समझौते का समापन करके यह अनुरोध कर सकता है, और मालिक को उसकी स्वतंत्रता प्राप्त करने में सहयोग करने के लिए उससे सहमत होना होगा ।

इस्लाम इस बात पर भी जोर देता है कि गुलामों को मुसलमानों के पैसे या राज्य के खजाने से भुगतान करके आजाद करने में मदद की जाए। तथा पैगंबर और उनके साथियों ने दासों को सार्वजनिक खजाने से मुक्त करने के लिए फिरौती पेश की है।

13- इस्लाम न्याय का धर्म है !

इसलाम ने न्याय न होने तथा लोगों के अधिकारों के नष्ट हो जाने के कारण से पृथ्वी पर भ्रष्टाचार फैलने पर प्रतिबंध लगाने के लिए न्याय तथा दूसरों के अधिकारों को संरक्षित रखने के सिद्धाातों की पुष्टि की है ताकि न्याय के अस्तित्व और अधिकारों को नुकसान से बचाया जासके।

अल्लाह पाक ने फरमायाः

(وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۗ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ قَدْ جَاءَتْكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ ۖ فَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ) سورة الأعراف: ٨٥

अर्थः (तथा हम ने मदयन की ओर उनके भाई शुऐब को भेजा। उन्होंने कहा कि हे मेरे समुदाय के लोगो तुम अल्लाह की इबादत करो उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। तुम्हारे अल्लाह की ओर से तुम्हारी ओर स्पष्ट निशानी आचुकी है, बस तुम नाप-तौल पूरा-पूरा

किया करो तथा लोगों को उनकी वस्तुऐं कम कर के न दो । और पृथ्वी में सम्पूर्ण सुधार के पश्चात उपद्रव मत फैलाओ । यह तुम्हारे लिए लाभकारी है यदि तुम ईमान ले आओ ।) सूरःआराफ़ 85

अल्लाह पाक ने फरमायाः

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا قَوَّامِينَ لِلَّهِ شُهَدَاءَ بِالْقِسْطِ ۖ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَآنُ قَوْمٍ عَلَىٰ أَلَّا تَعْدِلُوا ۚ اعْدِلُوا هُوَ أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ)

سورة المائدة: ٨

अर्थः (हे ईमानवालो अल्लाह के लिए सत्य पर दृढ़, न्याय पर साक्षी हो जाओ तथा किसी समुदाय की शत्रुता तम्हें न्याय न करने पर तत्पर (तैयार) न करे, न्याय करो वह संयम से निकटतम है तथा अल्लाह से डरो, वस्तुतः अल्लाह तुम्हारे कर्मों से सौचित है) सूरः मायदः 8

अल्लाह पाक ने फरमायाः

(إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَن تُؤَدُّوا الْأَمَانَاتِ إِلَىٰ أَهْلِهَا وَإِذَا حَكَمْتُم بَيْنَ النَّاسِ أَن تَحْكُمُوا بِالْعَدْلِ ۚ إِنَّ اللَّهَ نِعِمَّا يَعِظُكُم بِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ سَمِيعًا بَصِيرًا) سورة النساء: ٥٨

अर्थः (अल्लाह (तआला) तुम्हें आदेश देता है कि अमानत (धरोहर) उन के मालिकों को पहुँचा दो । और जब लोगों के बीच निर्णय करो तो न्याय के साथ निर्णय करो । निःसंदेह यह अच्छी बात है जिसकी शिक्षा अल्लाह

(तआला) तुम्हें दे रहा है । निःसंदेह अल्लाह (तआला) सुनता देखता है ।) सूरःनिसा-58

अल्लाह पाक ने फरमायाः

(إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَاءِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَيَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنكَرِ وَالْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ) سورة النحل:٩٠

अर्थः (निःसंदेह अल्लाह (तआला) न्याय का, भलाई का तथा निकट सम्बन्धियों के साथ सद्व्यवहार करने का आदेश देता है, तथा निर्लज्जता के कार्यों और दुराचारों एवं अत्याचार तथा क्रूरता से रोकता है । वह स्वयं तुमको शिक्षा दे रहा ताकि तुम शिक्षा प्राप्त करो । सूरःनहल 90

14- इस्लाम अधिकारों का संरक्षण करता है ।

दूसरों के सामाजिक अधिकार ।

इस्लाम हमें सिखाता है कि सामाजिक कर्तव्यों को दूसरों के प्रति प्यार. दाया तथा सम्मान पर आधारित होना चाहिये, इस्लाम ने समाज को जोड़ने वाले सभी रिश्तों में नीव, मानकों तथा नियंत्रणों और परिभाषित अधिकारों तथा कर्तव्यों को निरर्धारित किया है ।

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قِيلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوا فِي الْمَجَالِسِ فَافْسَحُوا يَفْسَحِ اللَّهُ لَكُمْ ۖ وَإِذَا قِيلَ انشُزُوا فَانشُزُوا يَرْفَعِ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ وَالَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ دَرَجَاتٍ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ) سورة المجادلة:١١

अर्थः (हे ईमानवालो जब तुम से कहा जाये कि सभाओं में थोडा खुल कर बैठो तो तुम स्थान विस्तृत कर दो, अल्लाह (तआला) तुम्हें विस्तार प्रदान करेगा तथा जब कहा जाये कि उठकर खड़े हो तो तुम उठकर खड़े हो जाओ, आल्लाह (तआला) तुम में से उन लोगों के जो ईमान लाये हैं तथा जो ज्ञान दिये गये हें उनके पद उच्च कर देगा | तथा अल्लाह (तआला) (प्रत्येक उस कार्य से) जो तुम कर रहे हो (भली-भाँति) परिचित है | सूरःमुजादिल-11

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(وَعَاشِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۚ فَإِن كَرِهْتُمُوهُنَّ فَعَسَىٰ أَن تَكْرَهُوا شَيْئًا وَيَجْعَلَ اللَّهُ فِيهِ خَيْرًا كَثِيرًا) سورة النساء:١٩

अर्थः (उनके साथ अच्छा व्यवहार करो यदि अगर तुम उन्हें पसन्द न करो परन्तु अति सम्भव है कि तुम एक चीज़ को बुरा जानो और अल्लाह (तआला) उसमें बहुत सी भलाई कर दे |) सूरःनिसा-19

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(وَاعْبُدُوا اللَّهَ وَلَا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا ۖ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَبِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينِ وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنبِ وَابْنِ السَّبِيلِ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَن كَانَ مُخْتَالًا فَخُورًا) سورة النساء:٣٦

अर्थः (तथा आल्लाह की आराधना करो उसके साथ किसी को साझा न करो तथा माता-पिता एवं संबन्धियों अनाथों निर्धनों तथा करीब के पड़ोसी एवं दूर के पड़ोसी तथा साथ के यात्री के साथ उपकार करो, तथा यात्री और जो तुम्हारे अधीन हैं (उनके साथ) निःसंदेह अल्लाह अहंकारी अभिमानी से प्रेम नहीं करता l) सूरःनिसा 36

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ بُيُوتِكُمْ حَتَّىٰ تَسْتَأْنِسُوا وَتُسَلِّمُوا عَلَىٰ أَهْلِهَا ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ) سورة النور٢٧

अर्थः (हे ईमानवालो अपने घरों के अतिरिक्त अन्य घरों में न जाओ जब तक कि आज्ञा न ले लो, तथा वहाँ के निवासियों को सलाम न कर लो यही तुम्हारे लिए उत्तम है ताकि तुम शिक्षा प्राप्त करो l) सूरःनूर 27

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(فَإِن لَّمْ تَجِدُوا فِيهَا أَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوهَا حَتَّىٰ يُؤْذَنَ لَكُمْ ۖ وَإِن قِيلَ لَكُمُ ارْجِعُوا فَارْجِعُوا ۖ هُوَ أَزْكَىٰ لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ) سورةالنور:٢٨

अर्थः (यदि वहाँ तुम्हें कोई न मिल सके तो फिर आज्ञा मिले बिना अन्दर न जाओ | तथा यदि तुम से लौट जाने को कहा जाये तो तुम लौट ही जाओ यही बात तुम्हारे

लिए सुथराई है जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह (तआला) भली-भाँति जानता है ।) सूरःनूर 28

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن جَاءَكُمْ فَاسِقٌ بِنَبَإٍ فَتَبَيَّنُوا أَن تُصِيبُوا قَوْمًا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوا عَلَىٰ مَا فَعَلْتُمْ نَادِمِينَ) سورة الحجرات:٦

अर्थः (हे ईमानवालो यदि तुम्हें कोई भ्रष्टाचारी सूचना दे तो तुम उसकी भली-भाँति छानबीन कर लिया करो (ऐसा न हो) कि अनभिज्ञता के कारण किसी समुदाय को हानि पहुँचा दो फिर अपने किये पर पछतावो ।) सूरःहुजुरात 6

अल्लाह पाक ने फरमाया

(وَإِن طَائِفَتَانِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ اقْتَتَلُوا فَأَصْلِحُوا بَيْنَهُمَا ۖ فَإِن بَغَتْ إِحْدَاهُمَا عَلَى الْأُخْرَىٰ فَقَاتِلُوا الَّتِي تَبْغِي حَتَّىٰ تَفِيءَ إِلَىٰ أَمْرِ اللَّهِ ۚ فَإِن فَاءَتْ فَأَصْلِحُوا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَأَقْسِطُوا ۖ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ) سورة الحجرات:٩

अर्थः (तथा यदि मुसलमानों के दो गुट आपस में लड़ पड़ें तो उनमें मेल-मिलाप करा दिया करो । फिर यदि उनमें से एक-दूसरे पर अत्याचार करे तो तुम (सब) उस गुट से जो अत्याचार करता है लड़ो यहाँ तक कि वह अल्लाह के आदेश की ओर लौट आये, अगर लौट आये तो न्याय के साथ उनके बीच न्याय के साथ संधि करा दो, तथा न्याय करो । निःसंदेह अल्लाह न्याय करने वालों से प्रेम करता है ।) सूरःसुजुरात-9

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ فَأَصْلِحُوا بَيْنَ أَخَوَيْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ) سورة الحجرات:١٠

अर्थः (याद रखो) समस्त मुसलमान भाई-भाई हैं, तो अपने दो भाईयों में मिलाप करा दिया करो । तथा अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम पर कृपा की जाये ।) सूरःहुजुरात-10

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّن قَوْمٍ عَسَىٰ أَن يَكُونُوا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَاءٌ مِّن نِّسَاءٍ عَسَىٰ أَن يَكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۖ وَلَا تَلْمِزُوا أَنفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوا بِالْأَلْقَابِ ۖ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوقُ بَعْدَ الْإِيمَانِ ۚ وَمَن لَّمْ يَتُبْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ) سورةالحجرات:١١

अर्थः (हे ईमानवालो, पुरुष दूसरे पुरुषों का उपहास न करें संभव है कि यह उनसे श्रेष्ठ हों तथा न महिलायें महिलाओं का उपहास करें संभव है कि ये उनसे श्रेष्ठ हों तथा आपस में एक-दूसरे पर आक्षेप (त्रुटि) न लगाओ, न किसी को बुरी उपाधि दो । ईमान के पश्चात अपशब्द बुरा नाम है तथा जो क्षमा न माँगे वही अत्याचारी लोग हैं ।) सूरःहुजुरात-11

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اجْتَنِبُوا كَثِيرًا مِّنَ الظَّنِّ إِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ إِثْمٌ ۖ وَلَا تَجَسَّسُوا وَلَا يَغْتَب بَّعْضُكُم بَعْضًا ۚ أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَن يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوهُ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ رَّحِيمٌ) سورة الحجرات:١٢

अर्थः (हे ईमानवालो अधिकांश बुरे अनुमानों (धारणाओं) से बचो, विश्वास करो कि कुछ बुरे अनुमान पाप हैं तथा भेद न टटोला करो और न तुममें से कोई किसी की चुगली (पीठ पीछे बुराई) करे । क्या तुममें से कोई भी अपने मरे भाई का माँस खाना प्रिय समझता है ? तुम को उस से घृणा होगी । तथा अल्लाह से डरते रहो निःसंदेह अल्लाह (तआला) क्षमा स्वीकार करने वाला कृपालु है ।) सूरःहुजुरात-12

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़ैहि वसल्ल्म के सेवक अनस बिन मालिक रिज़यल्लाहु अ़न्हु ने बयान किया है कि नबी सल्लल्लाहु अ़ैहि वसल्लम ने फरमाया : ((**तुममें से कोई उस समय तक पूर्ण मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि अपने भाई के लिए वह चीज़ न पसन्द करे जो अपने लिए पसंद करता है** ।)) सहीह बुखारी-सहीह मुस्लिम

माता -पिता का सम्मान :

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ۚ إِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ أَحَدُهُمَا أَوْ كِلَاهُمَا فَلَا تَقُلْ لَهُمَا أُفٍّ وَلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَهُمَا قَوْلًا كَرِيمًا) سورة الإسراء:٢٣

अर्थः (तथा तेरा रब खुला आदेश दे चुका है कि तुम उसके अतिरिक्त किसी अन्य की आराधना (इबादत) न

करना तथा माता-पिता के साथ उपकार करना | यदि तेरी उपस्थिति में इनमें से एक अथवा यह दोनों वृद्धावस्था को पहुँच जायें तो उनको उफ़ तक न कहान, उन्हें डाँटना नहीं, बल्कि उनके साथ सम्मान तथा आदर से बातचीत करना |) सूरः इसरा-23

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيَانِي) سورة الإسراء٣٤

अर्थः (तथ नम्रता एवं प्रेम के साथ उनके सामने सत्कार के हाथ फैलाये रखना, तथा प्रार्थना करते रहना कि हे मेरे अल्लाह इन पर ऐसे ही दया करना जैसा कि इन्होंने मेरे बाल्यकाल में मेरा पालन-पोषण किया है |) सूरः इसरा-24

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(وَوَصَّيْنَا الْإِنسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا ۖ حَمَلَتْهُ أُمُّهُ كُرْهًا وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا ۖ وَحَمْلُهُ وَفِصَالُهُ ثَلَاثُونَ شَهْرًا ۚ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَبَلَغَ أَرْبَعِينَ سَنَةً قَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَصْلِحْ لِي فِي ذُرِّيَّتِي ۖ إِنِّي تُبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِينَ) سورة الأحقاف:١٥

अर्थः (तथा हमने मनुष्य को अपने माता-पिता के साथ सदव्यवहार करने का आदेश दिया है | उसकी माता ने उसे दुख झेलकर गर्भ में रखा तथा दुख सहकर के उसे जन्म दिया | उसके गर्भ धारण तथा उसके दूध छुड़ाने की अवधि तीस महीने की है, यहाँ तक कि जब वह अपनी

पूरी व्यस्कता को तथा चालीस वर्ष की आयु को पहुँचा तो कहने लगा, हे मेरे अल्लाह मुझे संमति दे कि मैं तेरे उस उपकार की कृतज्ञता व्यक्त कर सकूँ जो तूने मुझ पर तथा मेरे माता-पिता पर उपकार किया है, तथा यह कि मैं ऐसे पुण्य के कार्य करूँ जिनसे तू प्रसन्न हो जाये तथा तू मेरी संतान को भी सदाचारी बना । मैं तेरी ओर ध्यान करता हूँ तथा मैं मुसलमानों में से हूँ ।) सूरः अह्क़ाफ-15

रिश्तेदारों तथा सम्बंधियों के अधिकार ।

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(وَآتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْمِسْكِينَ وَابْنَ السَّبِيلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيرًا) سورةالإسراء:٢٦

अर्थः (तथा सम्बन्धियों का, एवं निर्धनों का, तथा यात्रियों का हक अदा करते रहो । तथा अनर्थ तथा अपव्यय से बचो ।) सूरः इसरा-26

पड़ोसियों के अधिकार

✷ अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने बयान किया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमायाः **((अल्लाह की क़सम वह व्यक्ति पूर्ण मोमिन नहीं, अल्लाह की क़सम वह व्यक्ति पूर्ण मोमिन नहीं,आप से कहा गया : कौन हे अल्लाह के रसूल ? आप ने कहा :**

जिसके पड़ोसी उसके कार्य तथा बुराई से सुरक्षित नहीं ।) सहीह बुखारी-मुस्लिम

✷ जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने बयान किया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमायाः **((पड़ोसी अपने पड़ोसी के प्रतिवेशी का अधिक अधिकारी है तथा वह उसके अनुपस्थिता में उसका प्रतिक्षा करेगा यदि उन दोनों का मार्ग एक है ।))** मुस्नद अह्मद

✷ अबू ज़र रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने बयान किया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमायाः **((हे अबू ज़र जब तुम सालन बनाओ तो उसका पानी अधिक करदो तथा अपने पड़ोसियों को अवश्य दे दो ।))** सही मुस्लिम

✷ इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने बयान किया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमायाः **((अगर कोई अपनी जमीन बेचना चाहे तो सबसे पहले अपने पड़ोसी को बताये ।))** सुनन इब्न्ने माजह

अनाथों के अधिकार

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(فَأَمَّا الْيَتِيمَ فَلَا تَقْهَرْ) سورةالضحى:٩

अर्थः (तो अनाथ पर तू भी कठोरता न किया कर) सूरःज़ुहा-9

(فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۗ وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْيَتَامَىٰ ۖ قُلْ إِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ ۖ وَإِن تُخَالِطُوهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَعْنَتَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ) سورة البقرة:٢٢٠

अर्थः (सांसारिक और धार्मिक कर्मों को और आप से अनाथों के विषय में भी प्रश्न करते हैं आप कह दीजिये कि उनकी भलाई करना ही अच्छा है, तुम यदि अपने माल उनके माल में मिला भी लो तो वह तुम्हारे भाई हैं, कुविचार और सुविचार प्रत्येक को अल्लाह पूर्ण रूप से जानता है, और यदि अल्लाह चाहता तो तुम्हें कठिनाई में डाल देता । निःसंदेह अल्लाह सर्वशक्तिशाली एवं विधाता है । सूरः बक़रः-220

अल्लाह पाक ने फरमायाः

(وَإِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ أُولُو الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينُ فَارْزُقُوهُم مِّنْهُ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوفًا) سورةالنساء:٨

अर्थः (और जब बँटवारे के समय सम्बन्धी तथा अनाथ एवं निर्धन आ जायें तो तुम उसमें से थोड़ा बहुत उन्हें भी दे दो और उनसे कोमलता से बोलो ।) सूरः निसा-8

जानवरों एवं पशओं के अधिकारः

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(وَمَا مِن دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا طَائِرٍ يَطِيرُ بِجَنَاحَيْهِ إِلَّا أُمَمٌ أَمْثَالُكُم ۚ مَّا فَرَّطْنَا فِي الْكِتَابِ مِن شَيْءٍ ۚ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يُحْشَرُونَ) سورةالأنعام:٣٨

अर्थः (तथा जितने प्रकार के जीवधारी धरती पर चलने वाले हैं तथा जितने प्रकार के पंख से उड़ने वाल पक्षी हैं, उनमें से कोई भी प्रकार ऐसा नहीं जो कि तुम्हारी तरह के गुट न हों । हम ने पुस्तिका में लिखने से कोई वस्तु न छोड़ी फिर सब अपने रब के पास एकत्रित किये जायेंगे ।) सूरः अनआ़म -38

✹ अब्दुल्लाह इब्ने उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने बयान किया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमायाः **((एक महिला बिल्ली को यातना दी,क्योंकि उसने उसे बन्द कर दिया यहाँ तक कि वह मर गई, जिसके कारण वह नर्क में गई न ही उसने उसे खिलाया पिलाया तथा न ही उसने उसे छोड़ा कि जमीन के कीड़े मकोड़े खाये ।))** सही बुखारी-मुस्लिम

✹ अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने बयान किया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमायाः ((निःसंदेह एक आदमी ने एक कुत्ते को प्यास के कारण कीचड़ खाते देखा, तो उसने अपने जुराब (मोजे) लेकर कुआँ में से पानी भर कर पिलाया तो अल्लाह उस से प्रसन्न हुआ तथा उसे स्वंग में दाखिल कर दिया ।))

✷ अबू यअ़ला शद्दाद बिन औस रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने बयान किया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमाया : ((**अल्लाह ने प्रत्येक वस्तु पर दया तथा भलाई अनिवार्य किया है, अतः जब ज़बह करो तो अच्छे प्रकार ज़बह करो ! अपनी छुरी धारदार और तेज करलो तथा अपने जबह किये हुये जानवर को आराम दो ।**)) सही मुस्लिम

अर्थातः (जब प्राण निकल जाये तब उसका चमड़ा निकालना प्रारंभ करो)

15- इस्लाम समकालीन पर्यावरणीय मुद्दों का समाधान करता है ।

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَادْعُوهُ خَوْفًا وَطَمَعًا ۚ إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِينَ) سورةالأعراف:٥٦

अर्थः (तथा धरती में सुधार के पश्चात बिगाड़ न पैदा करो एवं भय तथा आशा के साथ उसकी आराधना करो निश्चय अल्लाह की दया सदाचारियों से निकट है ।) सूरः आराफ़-56

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ أَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيقَهُم بَعْضَ الَّذِي عَمِلُوا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ) سورةالروم:٤١

अर्थः (जल-थल में लोगों के कुकर्मों के कारण उपद्रव फैल गया इसलिए कि उन्हें उनके कुछ करतूतों का फल अल्लाह (तआला) चखा दे (अति) सम्भव है कि वह रुक जायें ।) सूरः रुम-41

16- युद्धों के कैदियों के अधिकारों पर जेनेवा कन्वेंशन को इस्लाम ने पीछे छोड़ दिया ।

नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लाम अपने अनुयायियों को कैदियों के संग अच्छे व्यवहार करने का आदेश देते तथा उन्हें अपने से पहले खिलाने पहनाने पर उभारते थे । अल्लाह पाक ने फरमाया :

(وَيُطْعِمُونَ الطَّعَامَ عَلَىٰ حُبِّهِ مِسْكِينًا وَيَتِيمًا وَأَسِيرًا (٨) إِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللَّهِ لَا نُرِيدُ مِنكُمْ جَزَاءً وَلَا شُكُورًا) سورةالإنسان:٩

अर्थः (निर्धन अनाथ तथा क़ैदियों को अल्लाह (तआला) के प्रेम में भोजन कराते हैं । हम तो तुम्हें केवल अल्लाह (तआला) की प्रसन्नता के लिए खिलाते हैं तुमसे बदला चाहते हैं न कृतज्ञता ।) सूरःदहर : 9-8

इस्लाम ने मुसलमानों को आत्म समर्पण करने वाले इन सेनानियों पर दया करने का आदेश दिया है । अल्लाह पाक ने फरमाया :

(وَإِنْ أَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ اسْتَجَارَكَ فَأَجِرْهُ حَتَّىٰ يَسْمَعَ كَلَامَ اللَّهِ ثُمَّ أَبْلِغْهُ مَأْمَنَهُ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُونَ) سورةالتوبه:٦

अर्थः (यदि मिश्रणवदियों में से कोई तुझसे शरण माँगे तो तू उसे शरण प्रदान कर दे यहाँ तक कि वह अल्लाह का कथन सुन ले फिर उसे उसके शान्ति स्थान तक पहुँचा दे | यह इस लिए कि वह अज्ञानी हैं |) सूरः तौब-6

इस्लाम ने महिलाओं, बच्चों, अंधों, विकलाँकों,भिक्षु और बुजुर्गों की हत्या से रोका है क्योंकि वे सेनानियों में से नहीं थे |

17- इस्लाम की वित्तीय प्रणाली अर्थव्यवस्था को स्थिर करने में सहयोग करती है |

इस्लाम में धन प्रणालीः व्यापार, वस्तुओं तथा सेवाओं के आदान-प्रदान, निर्माण और शहरीकरण के लिए है, और जब हम धन अथवा पैसे ऋण एवं कर्ज देते हैं तो हमारा उद्देश्य धन कमाना होता है | इस प्रकार हमने विनिमय और विकास के साधन के रूप में इसके प्राथमिक उद्देश्य से पैसा निकाला तथा इसे अपने आप में एक अन्त साधन बना दिया |

वह ब्याज या लाभ जो ऋण के लिए उधार दिया जाता है और इसे ऋणदाताओं के लिए प्रोत्साहन माना जाता है, क्योंकि यह जोखिम नहीं है | और फिर वर्षों से उधारदाताओं को प्राप्त होने वाला संचयी लाभ अमीर तथा गरीब के बीच की खाई को बढ़ाएगा | और अन्तिम अनुबंधों में व्यापक रूप से सरकार तथा संस्थायें इस

दायरे में मोटे तौर पर फंसेंगे । जैसा कि कुछ देशों की आर्थिक प्रणाली पतन तथा ढहने के कई उदाहरण हमने देखा है । निःसंदेह सूद तथा ब्याज में सामाजिक भ्रष्टाचार फैलाने में जो क्षमता है वह किसी अन्य अपराधों में कदापि नहीं है ।

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا الرِّبَا أَضْعَافًا مُّضَاعَفَةً ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ) سورةآل عمران١٣٠

अर्थः (ऐ ईमानवालो ! दुगना तिगना कर ब्याज ना खाओ । और अल्लाह से डरो ताकि तुम्हें मोक्ष मिले।) सूरः आले-इमरान-130

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(وَمَا آتَيْتُم مِّن رِّبًا لِّيَرْبُوَ فِي أَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْبُو عِندَ اللَّهِ ۖ وَمَا آتَيْتُم مِّن زَكَاةٍ تُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُونَ) سورةالروم:٣٩

अर्थः (तथा तुम जो ब्याज पर देते हो कि लोगों के माल में बढ़ता रहे, वह अल्लाह के यहाँ नहीं बढ़ता, तथा जो कुछ (दान एवं) ज़कात तुम अल्लाह के मुख के दर्शन के लिए दोगो, तो ऐसे ही लोग हैं अपना बढ़ाने वाले।) सूरः रूम-39

18 - इस्लाम धन तथा अवास्थ्य की रक्षा करता है ।

अल्लाह का अपने रचनाओं पर यह बहुत बड़ी दया है कि उसने हमें अच्छी चीज़ें खाने तथा गन्दी चीजों से रोका है ।

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الرَّسُولَ النَّبِيَّ الْأُمِّيَّ الَّذِي يَجِدُونَهُ مَكْتُوبًا عِندَهُمْ فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنجِيلِ يَأْمُرُهُم بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَاهُمْ عَنِ الْمُنكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبَاتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبَائِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ إِصْرَهُمْ وَالْأَغْلَالَ الَّتِي كَانَتْ عَلَيْهِمْ ۚ فَالَّذِينَ آمَنُوا بِهِ وَعَزَّرُوهُ وَنَصَرُوهُ وَاتَّبَعُوا النُّورَ الَّذِي أُنزِلَ مَعَهُ ۙ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ)
سورةالأعراف:١٥٧

अर्थः (जो लोग ऐसे निरक्षर (सांसारिक गुरुओं द्वारा शिक्षा न प्राप्त की हो) ईशदूत का अनुकरण करते हैं जिनको वह लोग अपने पास तौरात तथा इंजील में लिखा हुआ पाते हैं । वह उनको पुण्य के कार्यों का आदेश करते हैं तथा पाप के कार्यों से रोकते हैं । तथा पवित्र पदार्थों को वैध (प्रयोग करने योग्य) बताते हैं तथा अपवित्र (अशुद्ध) पदार्थों को निषेध (प्रयोग करने से रोकना) बताते हैं तथा उन लोगों पर जो भार एवं गले के फंदे थे उन को दूर करते हैं । इस लिए जो लोग इस नबी पर ईमान लाते हैं तथा उनका समर्थन करते हैं एवं उनकी सहायता करते हैं तथा उस प्रकाश का अनुकरण करते हैं जो उनके साथ भेजा गया है । ऐसे लोग पूर्ण सफलता प्राप्त करने वाले हैं ।) सूरः आराफ़- 157

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ۖ قُلْ فِيهِمَا إِثْمٌ كَبِيرٌ وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَإِثْمُهُمَا أَكْبَرُ مِن نَّفْعِهِمَا ۗ وَيَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنفِقُونَ قُلِ الْعَفْوَ ۗ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ) سورةالبقرة:٢١٩

अर्थः (लोग आपसे मदिरा और जुवा के विषय में प्रश्न करते हैं आप कह दीजिए इन दोनों में महापाप है | और लोगों को इससे सांसारिक लाभ भी होता है परन्तु उनका पाप उनके लाभ से कहीं अधिक है | आप से यह भी पूछते हैं कि क्या ख़र्च करें, आप कह दीजिए आवश्यकता से अधिक को | अल्लाह (तआला) इसी तरह अपने आदेश स्पष्ट रुप से तुम्हारे लिए वर्णित कर रहा है | कि तुम सोच समझ सको |) सूरःबक़र -219

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْأَنصَابُ وَالْأَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ فَاجْتَنِبُوهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ) سورةالمائدة:٩٠

अर्थः (हे ईमानवालो मदिरा एवं जुआ तथा मूर्तियों के स्थान एवं पाँसे गन्दे शैतानी काम हैं अतः तुम इससे अलग रहो ताकि सफल हो जाओ |) सूरःमायद - 90

19- महिलाओं के अधिकारों में इस्लाम को संयुक्त राष्ट्र पर श्रेष्ठता प्राप्त है |

अधिक लोगों को यह ज्ञान नहीं है कि एक मुस्लिम महिला अगर संयुक्त राष्ट्र के माध्यम से अपने अधिकारों का दावा करना चाहे तथा अपने इस्लामी अधिकारों को

छोड़ दे तो उसके लिए इसमें कितना बड़ा हानि होगा क्योंकि उसके लिए इस्लाम में अधिक अधिकार हैं।

इस्लाम से पहले, एक महिला के संग व्यापारी सामान व्यवहार किया जाता था, उसे व्यापार में पेश किया जाता था या उसकी सहमती के बिना तथा बिना उसके भावनाओं के संबंधों का ध्यान दिए विवाह के लिए लेली जाती थी। इस समय, महिला यह स्थिर करने की प्रयास करती है कि वह काम कर सकती जो पुरुष करते हैं, हालांकि वास्तव में, महिला इस अवस्था में अपनी विशिष्टता तथा विशेषाधिकार खो देगी, क्योंकि अल्लाह ने उसे जो काम करने के लिए बनाया है एक पुरुष नहीं कर सकता, जैसे जन्म देना तथा स्तनपान अथवा बच्चे को दूध पिलाना और देखभाल करना आदि। इस्लाम में अल्लाह व विश्वपालक के सामने जिम्मेदारी में पुरुष तथा महिला बराबर हैं, तथा उनसे पूजा के समान कर्तव्यों को पूरा करने की अपेछा की जाती है, जैसे नमाज़, ज़कात, रोज़ा तथा हज्ज आदि।

प्राचीन अरब संस्कृतियों की तुलना में इस्लाम ने महिलाओं की स्थिति में बहुत सुधार किया है, इस्लाम ने कन्या भ्रूण हत्या पर रोक लगाया, तथा महिलाओं को व्यक्तिगत स्वतंत्रा प्रदान किया, और अनुबंध संबंध मामलों की भी व्यवस्था किया, विशेष रूपसे शादी विवाह में, इसलम ने महिला के लिए महर, विरासत, निजी संपत्ति और अपने स्वयं धन के प्रबंधन में उसके

उत्तराधिकार अधिकार को सुनिशिचत तथा सुरक्षित रखा | इस्लाम से पहले महिला विरासत से वंचित थी, प्रन्तु इस्लाम आने के बाद विरासत में उसे सम्मिलित किया गया, बल्कि 30 से अधिक अवस्था में महिला पुरुष के तुलना में अधिक भाग अपना अंश पाती है, जबकि पुरुषों को रिश्ते तथा वंश के आधार पर केवल चार मामलों में अधिक अंश मिलता है, इसी प्रकार महिला तलाक या पति के देहांत के समय भी पति के घर में रहने का अधिकार पाती है तथा उसके और उसके संतान के लिए खर्च बर्च के लिए धन नियुक्त होता है |

शुभ कुरआन में कहीं हलका इशारह भी नहीं मिलता कि दादी हव्वा आदम अ़लैहिस्सलाम की गलती की जिम्मेदार हैं. प्रन्तु कहीं न कहीं यह इशारह मिलता है कि आदम अ़लैहिस्सलाम खुद पूर्ण रुपसे इसके जिम्मेदार हैं. आदम को ही अल्लाह पाक से दोष तथा पश्चाताप करने के लिए आज्ञा प्राप्त हुआ |

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(فَتَلَقَّىٰ آدَمُ مِن رَّبِّهِ كَلِمَاتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ ۚ إِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ) سورةالبقرة: ٣٧

अर्थः (आदम (अ़लैहिस्सलाम) ने अपने पालनहार से कुछ बातें सीख लीं (और अल्लाह से क्षमायाचना की) उसने उनकी याचना स्वीकार कर ली, निःसंदेह वही क्षमा करने वाला दयालू है) सूरः बक़रः-37

आदम(अ़लैहिस्सलाम) के पाप से महिला का कोई लेना देना नहीं है, बल्कि इस्लाम ने तो महिला के सम्मान को बढ़ाया है।

अबूहुरैरह रज़ियल्लाह अ़न्हु ने बयान किया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमाया हैः ((पूर्ण ईमान वाला वह व्यक्ति है जो नैतिकता में सब से अच्छा हो. तथा तुम में सब से अच्छा वह है जो अपनी पत्नियों के लिए अच्छा हो।)) तिरमिज़ी

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْقَانِتِينَ وَالْقَانِتَاتِ وَالصَّادِقِينَ وَالصَّادِقَاتِ وَالصَّابِرِينَ وَالصَّابِرَاتِ وَالْخَاشِعِينَ وَالْخَاشِعَاتِ وَالْمُتَصَدِّقِينَ وَالْمُتَصَدِّقَاتِ وَالصَّائِمِينَ وَالصَّائِمَاتِ وَالْحَافِظِينَ فُرُوجَهُمْ وَالْحَافِظَاتِ وَالذَّاكِرِينَ اللَّهَ كَثِيرًا وَالذَّاكِرَاتِ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُم مَّغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا)
سورةالأحزاب:٣٥

अर्थः (निःसंदेह मुसलमान पुरुष एवं मुसिलमान महिलायें ईमानदार पुरुष एवं ईमानदार महिलायें, आज्ञापालन करने वाले पुरुष एवं आज्ञापालन करने वाली महिलायें, सत्यवादी पुरुष एवं सत्यवादी महिलायें, धैर्य वाले पुरुष एवं धैर्य रखने वाली महिलायें, विनती करने वाले पुरुष एवं विनती करने वाली महिलायें, दान करने वाले पुरुष एवं दान करने वाली महिलायें, व्रत(रोज़े) रखने वाले पुरुष एवं व्रत (रोज़े) रखने वाली महिलायें, अपनी इंद्रियों की रक्षा करने वाले पुरुष एवं अपनी इन्द्रियों की रक्षा

करनेवाली महिलायें, तथा अत्याधिक अल्लाह का स्मरण करने वाले तथा करने वालियां, इन सबके लिए अल्लाह (तआला) ने विस्तृत मोक्ष एवं महान पुण्य तैयार कर रखा है ।) सूरःअहज़ाब-35

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَحِلُّ لَكُمْ أَن تَرِثُوا النِّسَاءَ كَرْهًا ۖ وَلَا تَعْضُلُوهُنَّ لِتَذْهَبُوا بِبَعْضِ مَا آتَيْتُمُوهُنَّ إِلَّا أَن يَأْتِينَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ وَعَاشِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۚ فَإِن كَرِهْتُمُوهُنَّ فَعَسَىٰ أَن تَكْرَهُوا شَيْئًا وَيَجْعَلَ اللَّهُ فِيهِ خَيْرًا كَثِيرًا) سورة النساء:١٩

अर्थः (ऐ ईमानवालो तुम्हारे लिए निषेध है कि बलपूर्वक स्त्रियों को उत्तराधिकार के रुप में ले बैठो । उन्हें इस लिए न रोक रखो कि जो तुम ने उन्हें दे रखा है उसमें से कुछ ले लो । हाँ यह और बात है कि वह कोई खुली बुराई तथा व्यभिचार का व्यवहार करें । उनके साथ अच्छा व्यवहार करो यद्यपि कि तुम उन्हें पसन्द न करो परन्तु अति सम्भव है कि तुम एक चीज़ को बुरा जानो और अल्लाह (तआला) उसमें बहुत सी भलाई कर दे ।) सूरःनिसा 19

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاءً ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا) سورةالنساء:١

अर्थः (हे लोगों अपने उस पालनहार से डरो जिसने तुमको एक जीव से तथा उसी से उसकी पत्नी को रचा और

दोनों से बहुत से नर-नारी फैला दिये और उस अल्लाह से डरो जिस नाम पर परस्पर माँगते हो तथा सम्बन्ध विच्छेद से डरो, वस्तुतः अल्लाह तुम पर संरक्षक है। सूरःनिसा-1

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّن ذَكَرٍ أَوْ أُنثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهُ حَيَاةً طَيِّبَةً ۖ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُم بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ) سورة النحل:٩٧

अर्थः (जो व्यक्ति पुण्य के कार्य करे नर हो अथवा नारी और वह ईमानवाला हो तो हम उसे निःसंदेह सर्वोत्तम जीवन प्रदान करेंगे। तथा उनके पुण्य के कार्यों का उत्तम बदला भी उन्हें अवश्य देंगे।) सूरःनहल-97

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَأَنتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ) سورةالبقرة:١٨٧

अर्थः (वह तुम्हारा वस्त्र हैं और तुम उनके वस्त्र हो।) सूरःबक़र-187

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَ لَكُم مِّنْ أَنفُسِكُمْ أَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوا إِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُم مَّوَدَّةً وَرَحْمَةً ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ) سورة الروم:٢١

अर्थः (तथा उसकी निशनियों में से है कि तुम्हारी ही जाति से पत्नियाँ पैदा कीं। ताकि तुम उनसे सुख पाओ, उसने तुम्हारे मध्य प्रेम तथा दया भाव उत्पन्न कर दिये,

निःसंदेह चिन्तन एवं विचार करने वालों के लिए इसमें बहुत सी निशनियाँ (लक्षण) हैं ।) सूरःरूम-21

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(وَيَسْتَفْتُونَكَ فِي النِّسَاءِ ۖ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِيهِنَّ وَمَا يُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتَابِ فِي يَتَامَى النِّسَاءِ اللَّاتِي لَا تُؤْتُونَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُونَ أَن تَنكِحُوهُنَّ وَالْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الْوِلْدَانِ وَأَن تَقُومُوا لِلْيَتَامَىٰ بِالْقِسْطِ ۚ وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِهِ عَلِيمًا (١٢٧) وَإِنِ امْرَأَةٌ خَافَتْ مِن بَعْلِهَا نُشُوزًا أَوْ إِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَن يُصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا ۚ وَالصُّلْحُ خَيْرٌ ۗ وَأُحْضِرَتِ الْأَنفُسُ الشُّحَّ ۚ وَإِن تُحْسِنُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا) سورة النساء:١٢٨

अर्थः (वे नारियों के विषय में आप से प्रश्न करते हैं, आप कह दें कि स्वयं अल्लाह तुम्हें उनके विषय में आदेश देता है और जो कुछ किताब (कुरआन) में तुम्हारे समक्ष पढ़ा जाता है, उन अनाथ नारियों (लडकियों) के संदर्भ में जिनको तुम उनका अनिवार्य अधिकार नहीं देते तथा उनसे विवाह करना चाहते हो तथा निर्बल के विषय में, और यह कि तुम अनाथों के विषय में न्याय करो । तथा तुम जो भी सत्य कार्य करोगे अल्लाह उसे भली-भाँति जानने वाला है । और यदि किसी पत्नी को अपने पति के वियोग अथवा विमुखता का भय हो तो दोनों पर परस्पर संधि कर लेने में कोई दोष नहीं । तथा संधि उत्तम है, और लालसा हर मन में स्थिर कर दी गई है, और यदि तुम उपकार करो तथा संयम करो,तो अल्लाह तुम्हारे कृतियों से सूचित है ।) सूरः निसाः127-128

अल्लाह पाक ने पुरुषों को महिलाओं पर खर्च करने तथा उनके धन की सुरक्षा करने का आज्ञा दिया है तथा महिलाओं के ऊपर परिवार के प्रति कोई वित्तीय दायित्व नहीं ड़ाली है, इसी प्रकार इस्लाम ने महिलाओं के व्यक्तितत्व तथा पहचान को भी संरक्षित करते हुए विवाह तथा पति से जुड़ने के बाद भी अपने परिवार का नाम बाकी रखने की अनुमति दी है ।

इस्लाम ने तलाक देने की अनुमति दी है प्रन्तु उसे अप्रिय कर्म कहा है, विवाह पति-पत्नी के बीच एक मजबूत संबंध है, और अगर जोड़े सद्धाव तथा सामंजस्य नही रह सकते तो एसी प्रस्तिथी में तलाक देने का निर्णय लेने से पहले तीन आवश्यक कदम तथा चरण हैं । उपदेश एवं सलाह-मध्यस्था-प्रतीक्षा जब तक आत्मा शांत न हो जाए ।

अल्लाह पाक ने फरमायाः

(وَإِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوا حَكَمًا مِّنْ أَهْلِهِ وَحَكَمًا مِّنْ أَهْلِهَا إِن يُرِيدَا إِصْلَاحًا يُوَفِّقِ اللَّهُ بَيْنَهُمَا ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا خَبِيرًا) سورةالنساء:٣٥

अर्थः (यदि तुमको (पति-पत्नी के) मध्य अनबन होने का भय हो तो एक पंच पति के परीवार से और एक पत्नी के परिवार से नियुक्त करो यदि ये दोनों परस्पर संधि कराना चाहें तो अल्लाह उन दोनों को मिला देगा निश्चय अल्लाह ज्ञाता सूचित है ।) सूरःनिसा-35

ईसा अलैहिस्सलाम की माता जी मरयम मात्र एक ऐसी महिला हैं जिनका शुभ नाम कुरआन में आया है, प्रन्तु कुरआन में बहुत सारी कहानियाँ हैं जिनमें कई महिलाओं की बहुमूल्य आचरण और कृति बयान किया गया है, जैसे बिल्कीस सबा की रानी, अल्लाह के नबी सुलैमान के साथ, जो अल्लाह पर इमान में अपनी उदाहरण स्वयं है।

अल्लाह पाक ने फरमायाः

(إِنِّي وَجَدتُّ امْرَأَةً تَمْلِكُهُمْ وَأُوتِيَتْ مِن كُلِّ شَيْءٍ وَلَهَا عَرْشٌ عَظِيمٌ)
سورةالنمل:٢٣

अर्थः (मैं ने देखा कि उनकी बादशाहत एक महिला कर रही है जिसे हर प्रकार की वस्तु से कुछ न कुछ प्रदान किया गया है तथा उसका सिंहासन भी बड़ा भव्य है।)
सूरःनमल-23

इस्लामी इतिहास हमें बताती है कि अन्तिम संदेष्टा मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने महिलाओं से प्रामर्श लिया है, अतः अनेक हालत में उनके प्रामर्श स्वीकार किया है, और इस्लाम ने महिलाओं को भी पुरुषों के प्रकार मस्जिद जाने की अनुमाति दी है,महिलायें पुरुषों के साथ युद्धों में भागीदार रहती थीं तथा जखमियों के देख रेख में सहयोग करती थीं, इसी प्रकार वह व्यापारिक लेनदेन तथा शिक्षा और ज्ञान में भी आगे रहती थीं।

हाँ यह सच है कि इस्लाम ने चार विवाह करने की अनुमति दी है, हालाँकि यह नियम नहीं है बल्कि एक अपवाद है, तथा ऐसी बात नहीं है जैसा कि कुछ लोगों की सोच है कि एक मुसलमान एक से अधिक विवाह करने पर मजबूर है l

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(وَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تُقْسِطُوا فِي الْيَتَامَىٰ فَانكِحُوا مَا طَابَ لَكُم مِّنَ النِّسَاءِ مَثْنَىٰ وَثُلَاثَ وَرُبَاعَ ۖ فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تَعْدِلُوا فَوَاحِدَةً أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ۚ ذَٰلِكَ أَدْنَىٰ أَلَّا تَعُولُوا) سورةالنساء:٣

अर्थः (यदि तुम्हें भय हो कि अनाथ लड़कियों से विवाह करके तुम न्याय न कर सकोगे तो अन्य स्त्रियों में जो तुम्हें अच्छी लगें तुम उनसे विवाह कर लो, दो-दो, तीन-तीन, चाराचारा, परन्तु यदि समानता न रखने का भय है तो एक ही काफ़ी है अथवा तुम्हारे स्वामित्व की दासियाँ, यह अधिक निकट है कि (ऐसा अन्याय करने से) एक ओर झुक जाने से बचो) सूरःनिसा-3-4

संसार में शुभ कुरआन मात्र एक धार्मिक पुस्तक है. जसि में है कि न्याय की शर्त पूरी न होने पर केवल एक पत्नी से विवाह करें, जबकि इस्लाम से पहले,पत्नियों की संख्या के लिए कोई सीमा नहीं था, एक एक के पास दसियों पत्नियाँ थीं, बल्कि सौ भी थीं, प्रन्तु इस्लाम आने के बाद उसने अधिक से अधिक चार पत्नियों की अनुमति

दी। इस्लाम एक आदमी को दो, तीन या चार महिलाओं से विवाह करने की अनुमित देता है बशर्ते कि पुरुष में न्याय करने और सुनिश्चित करने की क्षमता हो। और यह कोई सरल बात नहीं है।

अललाह पाक ने फरमाया :

(وَلَن تَسْتَطِيعُوا أَن تَعْدِلُوا بَيْنَ النِّسَاءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ ۖ فَلَا تَمِيلُوا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوهَا كَالْمُعَلَّقَةِ ۚ وَإِن تُصْلِحُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا) سورة النساء: ١٢٩

अर्थः (तथा तुम पत्नियों के बीच कदापि न्याय न कर सकोगे तब भी इसकी आकांक्षा रखो, अतः तुम (एक की ओर) पूर्णतः न झुक जाओ कि दूसरी को बीच में लटकती हुई छोड़ दो, और यदि तुम सुधार कर लो और (अन्याय से) बचो तो निःसंदेह अल्लाह क्षमाशील कृपालु है।) सूरःनीसा-129

प्रकृति नियम अनुसार नर तथा मादा लगभग एक ही अनुपात में पैदा होते हैं, और वैज्ञानिक रूप से भी जाना जात है कि मादा बच्चों के जीवित रहने की संभावना पुरुषों की तुलना में अधिक होती है, तथा इसके अतिरिक्त युद्धों में, नर हत्या का प्रतिशत महिलाओं की तुलना में अधिक है, यह भी वैज्ञानिक रूप से जाना जाता है कि महिलाओं की अवसत जीवन प्रत्याशा पुरुषों की अवसत से अधिक है, जिस से विधवा महिलाओं की दर

से पुरुष विधवाओं के अनुपात से अधिक होता है, इस प्रकार हम इस निष्कर्ष पर पहुंचेंगे कि महिलाओं की आबादी की जनसंख्या पुरुषों की जनसंख्या से अधिक है, तदनुसार प्रत्येक परुष को एक पत्नी तक सीमित रखना व्यवहारिक रूप से उचित नहीं हो सकता है।

जिन समाजों में बहुविवाह पर पाबंदी है, वहाँ विवाह से बाहर पुरुषों का कई रखैल तथा महिलाओं से नाजायज संबंध रखना आम बात है, तथा इस स्थिती में प्रियतमा अपने या अपने बच्चों के लिए बिना किसी अधिकार के अपमानजनक, असुरक्षित जीवन गुजारे गी, और यह बहुत ही आश्चर्यजनक बात है कि इस समाज को बिना विवाह या समान-लिंग विवाह के संबंध स्वीकार करने में कोई समस्या नहीं है, और न ही बिना स्पष्ट जिम्मेदारी के संबंध स्वीकार करना, यहाँ तक कि माता-पिता के बिना बच्चों का स्वीकार करने आदि में भी कोई समस्या नहीं है, प्रन्तु एक पुरुष तथा एक से अधिक महिला के बीच कानूनी विवाह की अनुमति नहीं देता, जबकि इस्लाम इस मामले में और महिलाओं की गरिमा तथा अधिकारों के संरक्षण के लिए बहुविवाह की अनुमति देने और उन महलिाओं की समस्यायों का समाधान करने में जिन्हे एक अविवाहित नहीं मिलता है तथा उनके पास एक वैवाहिक पुरुष से विवाह करने या प्रेमी होने के लिए

स्वीकार करने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं मिलता, उनके इस प्रकार के संकटों के समाधान करने में बुद्धिमता तथा स्पष्ट है।

अपितु, एक महिला विवाह के अनुबंध में इस शर्त का उल्लेख करके अपने पति की एकमात्र पत्नी होने का हकदार है, तथा यह एक बुनियादी शर्त है जिसका पालन करना अनिवार्य है,और इसे तोड़ने एवं नजर अन्दाज करने की अनुमति नहीं है।

सबसे महत्वपूर्ण बिंदुओं में से एक यह है जो अधिक्तर आधुनिक समाज में अनदेखी की जाती है, वह अधिकार है जो इस्लाम ने पुरुषों के अतिरिक्त महिलाओं को दिया है।

एक पुरुष अपना विवाह केवल अविवाहित महिलाओं तक ही सीमित रखता, जबकि एक महिला अपना विवाह विवाहित तथा अविाहित पुरुष से कर सकती है।

यह वास्तविक पिता से बच्चों के वंश तथा अधिकारों और पिता से विरासत की रक्षा की प्रतिभूति के लिए है।

प्रन्तु इस्लाम एक महिला को विवाहित पुरुष से विवाह करने की अनुमति देता है बशर्तेकि उसके पास चार पत्नी से कम पत्नी हों, इसी कारण एक महिला के

पास पति खोजने तथा चुनने के लिए अधिक मैदान तथा व्यापाक स्थान है, अतः विवाहित पुरुष से विवाह करने की इच्छा पर उसके पास उस पति के नैतिकता के बारे में पता लगाने का अवसर है कि उसका रहन सहन पहली पत्नी के संग कैसा है ? ।

20- इस्लाम प्रेम तथा सहयोग का धर्म है ।

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(وَاعْتَصِمُوا بِحَبْلِ اللَّهِ جَمِيعًا وَلَا تَفَرَّقُوا ۚ وَاذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ كُنتُمْ أَعْدَاءً فَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِكُمْ فَأَصْبَحْتُم بِنِعْمَتِهِ إِخْوَانًا وَكُنتُمْ عَلَىٰ شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَأَنقَذَكُم مِّنْهَا ۗ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ) سورة ال عمران:١٠٣

अर्थः (और अल्लाह (तआला) की रस्सी को सब मिलकर बलपूर्वक थाम लो । और गुटबन्दी न करो । और अल्लाह (तआला) की उस समय की कृपा को याद करो कि जब तुम लोग एक दूसरे के शत्रु थे, तो आपस में प्रेम डाल दिया और तुम उसकी कृपा से भाई-भाई हो गये । और तुम आग के गड्ढे के किनारे तक पहुँच चुके थे तो उसने तुम्हें बचा लिया । अल्लाह (तआला) इसी प्रकार अपनी निशानियों का वर्णन करता है ताकि तुम मार्ग पा सको ।) सूरःआले-इमरान-103

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(وَتَعَاوَنُوا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ ۖ وَلَا تَعَاوَنُوا عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ) سورةالمائدة:٢

अर्थः (तथा स्वभाव एवं संयम पर परस्पर सहायता करो और अल्लाह से डरते रहो निश्चय अल्लाह कठिन यातना देने वाला है ।) सूरःमायदः -2

21: लोक-प्रलोक में स्वभाग्य प्राप्त करने के लिए एक मात्र धर्म इस्लाम ही है ।

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(إِنَّ الدِّينَ عِندَ اللَّهِ الْإِسْلَامُ ۗ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ إِلَّا مِن بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۗ وَمَن يَكْفُرْ بِآيَاتِ اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ) سورة ال عمران:١٩

अर्थः (निश्चय अल्लाह के पास धर्म इस्लाम ही है, (अल्लाह के प्रति पूर्ण आत्म समर्पण) तथा जो धर्मशास्त्र दिये उन्होंने ज्ञान आने के पश्चात परस्पर द्वेष के कारण मतभेद किये । तथा जो अल्लाह की आयतों (पवित्र कुरआन) को न माने तो अल्लाह शीघ्र हिसाब लेगा ।) सूरःआल-इमरान-19

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(وَمَن يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَن يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ) سورة ال عمران:٨٥

अर्थः (और जो व्यक्ति इस्लाम के अतिरिक्त किसी अन्य धर्म की खोज करे, उसका धर्म मान्य नहीं होगा, और वह परलोक (आख़िरत) में क्षति ग्रस्ताओं में होगा ।) सूरःआले-इमरान-85

(3) नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसलम की व्यक्तित्व अभिरुचिता

इतिहास में अनेक गैर-मुस्लिम रहनुमाओं तथा नेताओं ने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बारे में अपनी पसन्दीदगी प्रकट की है, तथा इस प्रशंसा से इस्लाम के संदेश में रूचित पैदा हुआ है और इनमें से कुछ को निम्न में लिखा जार हा है ।

-नेपोलियन बोनापार्ट

मुझे आशा है कि वह दिन आएगा जब सभी राष्ट्र के सभी बुद्धिमान तथा शिक्षित लोग इकट्ठा हो कर नोबल कुरआन पर आधारित एक एकीकृत और न्यायपूर्ण विश्व व्यवस्था स्थापित करेंगे, जो इस संसार का एकमात्र सत्य है । तथा वही मात्र मानवता को मुक्ति की ओर ले जाता है । (पुस्तक -नेपोलियन और इस्लमम,पेरिस1914)

- महात्मा गांधी

महात्मा गांधी ने एक समाचार पत्रः यांग इंडिया,में पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की विशेषताओं के बारे में कहा था :

((मैं एक ऐसे व्यक्ति की विशेषताओं को जानना चाहता था जिसका शासन बिना संघर्ष लाखों लोगों के दिलों पर

है, मैं पूर्ण रूपसे आश्वस्त हो गया कि तलवार वह साधन नहीं था जिसके द्वारा इस्लाम ने अपना महान स्थान प्राप्त किया है | बल्कि यह मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सादगी, सटीकता, वादों में ईमानदारी, समर्पण और अपने मित्रों,अनुयायियों के प्रति साहस के साथ निष्ठा तथा अपने रब और अपने संदेश पर पूर्ण विश्वास के कारण था | यही वह विशेषतायें है जिन्हों ने मार्ग बनाये तथा कठिनाइयों को दूर किया न कि तलवार ने | पैगंबर के जीवन के दूसरे भाग को पढ़ने के बाद, मैंने अपने मन में खेद व्यक्त किया कि उनके महान जीवन के बारे में अधिक जानने के लिए और कुछ मेरे पास नहीं है |))

- लामार्टाइन

फ्रेंच कवि लामार्टाइन ने (हिस्ट्री आफ द टर्क्स) में महान नेताओं के तीन उद्देश्य उपाय तथा पैमाने निर्धारित किए हैंः

1- उद्देश्य की महानता

2- साधन की कमी

3- शानदार परिणाम

और इसके बाद निष्कर्ष निकालता है !

((दार्शनिक-उपदेशक, दूत, शास्त्रनियामक, योद्धा, झूठे विचारों को नष्ट करने वाला. मूर्तियों या चित्रों के बिना पूजा तथा तर्कसंगत मान्यताओं को पुनर्जीवित करने वाला, 20 सांसारिक साम्राज्यों के संस्थापक तथा एक आध्यात्मिक साम्राज्य मुहम्द हैं।))

उन सभी उपायों को देखते हुए जिनके द्वारा लोगों की महानता को मापा जा सकता है, हमें यह पूछने का अधिकार है कि क्या उनसे बड़ा कोई व्यक्ति है ?

- एडवर्ड गिबन

एडवर्ड गिबन अंग्रेज़ी इतिहासकार कहते हैंः कोई भी दार्शनिक जो भगवान के अस्तित्व पर विश्वास रखता है उसे मुहम्मद-सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम- के परिचित पंथ तथा आस्थाओं को स्वीकार करना ही पड़ेगा। अतः यह विश्वास तथा आस्था आज हमारे दिमाग से बेहतर है।

- बोसोर्ट स्मिट

अंग्रेज़ी प्राच्यावादी बोसोर्ट स्मिट कहते हैंः कि मुहम्मद अपनी पूरी जीवन के सिद्धांतों से स्पष्ट थे के वे वास्तव में अल्लाह के दूत हैं। (बोसोर्ट स्मिट की पुस्तकः एशिया में साहित्य-भूमिका)

मुहम्मद एक ही समय में राजनीतिक तथा धार्मिक नेता दोनों थे, प्रन्तु उन्हें पादरी का अहंकार नहीं था, कैसर के प्रकार उनकी भी कोई विरासत नहीं थी. उनके पास कोई सेना, निजी गार्ड, निर्मित महल या निश्चित धन नहीं था | यदि कोई भी यह कह सकता है कि अल्लाह की शक्ति द्वारा शासित से शासक बना तो वह मुहम्मद हैं, क्योंकि वह उपकरण तथा अपने लोगों के समर्थन के बिना सत्ता को धारण करने में सक्षम थे |

- एनी बिज़ेंट

ब्रिटिश लेखक तथा महिला अधिकार कार्यकर्ता एनी बिज़ेंट कहती हैं :

((यह महान अरब पैगंबर के जीवन तथा व्यक्तित्व का अध्यन करने वाले व्यक्ति के लिए असंभव है जो जानता है कि कैसे जीना है और अपने अनुयायियों को कैसे सिखाना है सिवाय इस सर्वशक्तिमान पैगंबर के लिए कि यह अल्लाह के बडे दूतों में से एक महान दूत हैं तथा उनकी महानता स्वीकार किये बिना वह रह नहीं सकता, यधपि मैं आपको कई परिचित चीजों को बताऊंगी, मैं व्यक्तिगत रूप से जब भी उन्हें बार बार पढ़ी तो हर बार मुझे एक नए रूप से उनकी प्रशंसा की भावना मिली और इस महान अरब शिक्षक के लिए सम्मान की

नई भावना प्राप्त हुई ।)) (पुस्तक-मुहम्मद के जीवन तथा शिक्षाओं के बारे में-1932 पेज-4)

- जेम्स मिचेनर

जेम्स मिचेनर ने पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सादगी, मानवता, बड़क्पन, दृढ़ता तथा दया की ओर संकेत देते हुए उनकी कुछ छवियों के बारे में कहते हैं :

((यह मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम एक प्रेणक व्यक्ति हैं जिन्हों ने इस्लाम की स्थापना की, उनका जन्म एक अरब जनजाति में हुआ जो मूर्तियों के पुजारी थे, तथा अनाथ पैदा हुए, जो गरीबों, विधवाओं, अनाथों, दासों तथा असुरों से अति प्रेम करते थे | निःसंदेह मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने असाधारण चरित्र तथा समग्र रूप से अरब प्रायद्वीप और पूर्व में क्रांति ला दी | जिसने मूर्तियों को अपने हाथ से तोडा, और एक ऐसे धर्म की स्थापना की जो एक अल्लाह की पूजा का आवाहन करता है, महिलाओं को रेगिस्तानी (मरुभुमी) परंपराओं द्धारा लागाए गए बंधनों को दूर भगाया, सामाजिक न्याय का झंडा लहराया, उनके अंतिम दिनों में उनके लिए बादशाहत तथा ओकिदिसाह पेश किया गया प्रन्तु उन्हों ने एक अल्लाह के दासों में से एक दास के

सिवा कुछ स्वीकार न किया, जिसे अल्लाह ने संसार वालों के लिए अग्रदूत के रूप में भेजा है ।

इस्लामः वह धर्म है जिसे गलत समझा गया है,रीडर्स डाइजेस्ट, (अमरीकी पिरिंट,मई-1955-पेज,68-70)

- माइकल हार्ट

खगोलशास्त्री, गणितज्ञ तथा इतिहासकार ने 100 अमर ग्रंथों की पुस्तक लिखा है, जिसमें उन्होंने इतिहास में उन मनुष्य पर शोध किया है, जिनका मनुष्यों पर सबसे अधिक प्रभाव था । उनमें से निम्न लोगों का उल्लेख कियाः
मसीह, मूसा, आसूस, अरस्तु, बुद्ध, कन्फ्यूशियस, हिटलर, पारसी आदि । उन्होंने प्रभाव के आधार पर अपने मूल्यांकन पर भरोसा किया तथा एक नंबर से सौ नंबर तक पहले पद पर पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को रखा जिसका कारण माइकल हार्ट ने यह लिखा किः ((मानवता में संसार के सबसे प्रभावशाली लोगों की सूची में मुहम्मद को पहले स्थान में लाने पर कुछ पाठकों को आश्चर्यचकित कर सकती है तथा कुछ को इससे आपत्ति हो सकती है । प्रन्तु वे इतिहास में एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने धार्मिक तथा सांसारिक दोनों सतहों पर उत्कृष्ट सफलता प्राप्त की ।))
(सौ इम्मोर्टल्स,पृष्ट 33,माइकल हार्ट)

- *सरोजिनी नायडू*

भारतीय कवि सरोजनी नायडू ने पुस्तकः (इस्लाम के आदर्श) मे लिखा है किः ((लोकतंत्र का आहवान करने तथा उसे लागू करने के लिए इस्लाम पहला धर्म है। जब यह मस्जिद में नमाज अदा करने के लिए अज़ान देता है और नमाज़ पढ़ने वाले इकट्ठा होते है, तो लोकतंत्र को दिन में पांच बार लागू करता है, जब राजा तथा प्रजा घुटने टेकते हुये अल्लाहु अक्बर (अल्लाह सबसे बड़ा तथा महान है) कहते है। और मुझे इस्लामी एकता अनेक बार पसंद आया जिसने लोगों को स्वभाव से भाई भाई बना दिया।))

- *थॉमस कारबेल*

थाँमस कारबेल, लेखक (चैम्पियनशिप और पूजा के नायक, लंदन-1959) ने कहा हैः ((दो दशकों से कम समय में एक व्यक्ति अकेले युद्धरत जनजातियों तथा खानाबदोशों को एक मजबूत और सभ्य राष्ट्र में कैसे एकीकृत कर सकता है ?

- *स्टेनली ली पॉल*

ब्रिटिश प्राच्यविद तथा पुरातत्वविद् स्टेनली ली पॉल जी ने 1854 में जन्म पाया, कहता है :
((मुहम्मद -सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम- एक अति दयालू तथा मोही थे, रोगी का हाल चाल लेते, गरीबों से मिलने

जाते, गुलामों की दावत स्वीकार करते, अपने कपड़े स्वंय टाँक (सिल) लेते, इसलिए वे निःसंदेह एक पवित्र संदेष्टा थे, एक बेसहारा अनाथ पले बढ़े, यहाँ तक कि एक महान विजेता बन गए |)) पुस्तक,(तालिका के साथ बात चीत, नबी मुहम्मद कलाम-1893)

- जॉर्ज बर्नार्ड शॉ

जॉर्ज बर्नार्ड शॉ ने पैगंबर मुहम्मद के बारे में अपने विवरण में कहा है किः ((हमें उसे मानवता का उद्धारकर्ता कहना चाहिए | मेरा मानना है कि यदि उनके जैसा आदमी पाया जाए तथा समकालीन दुनिया का नेतृत्व ग्रहण करले तो वह दुनिया की सभी समस्याओं को ऐसे प्रकार समाधान करने में सफल होता जो वांछित सुख और शांति लाता है |)) (सत्य इस्लाम.भाग8-1936)

4- सारांश

इस्लाम में ऐसा कुछ भी नहीं है जो लोगों को नास्तिकता की ओर ले जाए, इस्लाम में कोई गोप्य या रहस्य नहीं है जो मन को भ्रमित करे, इस्लाम अति सरल तथा ठोस है ।

❁ एक अल्लाह ने प्राणियों तथा संसार को पैदा किया है, तथा उसी के ओर सभी प्राणियों को महाप्रलय के दिन एकत्रित और इकट्ठा किया जाएगा ।

❁ सृष्टिकर्ता ने सभी समुदाय के लिए एक संदेश भेजा तथा मुक्ति का एक मार्ग निर्धारित किया जो सभी अनुयायियों के लिए एक सरल तथा स्पष्ट संदेश है, वह यह है किः केवल एक अल्लाह पर ईमान तथा विश्वास रखना और मात्र उसी की इबादत और पूजा करना, पैगंबर कि अपने अनुयायियों में उपस्थिती एक मार्गदीप के प्रकार थी जो उनके लिए मार्गों को रोशन करती थी और उन्हें मुक्ति प्राप्त करने का एक उज्जल मार्ग दिखाती थी, वह यह किः पैगंबर की शिक्षाओं तथा उनके कार्यों का अनुसरण करके एक अल्लाह ही की पूजा द्वारा की जा सकती है. और ऐसा नहीं है जैसा कि कुछ लोग गलती से समझते हैं, कि अल्लाह की निकटता प्राप्त

करने के लिए पैगंबर को मध्यस्था या देवता बना लिया जाये ।

❁ सभी के लिए इस्लाम में कोई पुरोहित नहीं है । अल्लाह के समाने सभी लोग समान हैं तथा उनकी योग्यता उनके कर्मों और व्यवहार तथा उनके कर्म के अनुसार है, नसल, रंग तथा जातियों के आधार पर कोई अंतर नहीं है ।

❁ पैदा करने वाले का अधिकार यह है कि मात्र उसी की उपासना की जाये उसकी पूजा में किसी को भागीदार न किया जाये तथा एक व्यक्ति को अपने अल्लाह के साथ सीधा संबंध रखने का अधिकार है ।

❁ हर बच्चा इस्लाम की प्रकृति पर पैदा होता है, और छोटा बालक सदैव अपने प्रकृति पर होता है, अपने निर्माता की सहयोग मांगता है तथा अपने आसपास के लोगों के हस्तक्षेप के बिना उसी की पूजा करता है । प्रन्तु जब वह वयस्कता तथा यौवन को पहुंचता है, तो वह अपने कार्यों के लिए जिम्मेदार हो जाता है, और अपने विचार तथा विश्वास एवं आस्था में मुक्त और अपनी स्वतंत्रता का मालिक हो जाता है । फिर या तो वह अपने प्रकृति पर रहते हुए एक अल्लाह की पूजा पर बाकी रहता है, या फिर वह अपने तथा अपने पैदा करने वाले

के बीच मध्यस्ता बना कर अपने धर्म को बदल देता है। और यह वांछनीय है कि बच्चे की धार्मिक संसकृति उसके आसपास के वातावरण (जैसे कि परिवार तथा शैक्षणिक संस्थान) के माध्यम से उसमें भगवान के बारे में विचारों तथा अवधारणाओं और उनकी पूजा करने के तरीके के बारे में सीधे निर्देशित किया जाता है। या बच्चे को अल्लाह के लिए मध्यस्थाओं तथा भागीदारों के पाये जाने की शिक्षा देकर समझाया जाता है, (जैसे क्राइस्ट जीसस, मैरी. गौतम बुद्ध, मूर्तियों या पैगंबर मुहम्मद आदि) इसी लिए बच्चे की धार्मिक आस्था उसके आसपास के वातावरण पर निर्भर होता है, और यह पूजा के तरीके पर भविष्य में सबसे अधिक प्रभावित करता है। यद्यपि अगरचे बड़े होने पर धर्म चुनने के लिए वह स्वंतंत्र होता है फिर भी उसे सामाजिक विरासत को बदलने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

❧ कोई मूल्य पाप नहीं है. और दूसरों के पापों के लिए कोई निर्दोष जिम्मेदार नहीं है, अल्लाह पाक सभी की धर्मनिष्ठता तथा धार्मिकता के आधार पर परिक्षा करेगा।

❧ इस्लाम अच्छे नैतिकता अपनाने तथा दुष्ट कार्यों से बचने की आमंत्रित करता है, इसी लिए कुछ मुसलमानों का बुरा व्यवहार उनके सांस्कृतिक रीति-रिवाजों या उनके र्धम के प्रति अज्ञानता के कारण है।

❋ इस्लाम ज्ञान से असंगत नहीं है। यह हमें याद रखना चाहिए कि अनेक पश्चिमी विद्वान जो अल्लाह पर ईमान नहीं लाये, वे अपनी वैज्ञानिक खोजों के माध्यम से निर्माता तथा जन्मदाता के अस्तित्व की अनिवार्यता के तथ्य को स्वीकार किये है।

❋ इस्लाम धर्म का नाम किसी व्यक्ति, स्थान या संस्था से संबद्ध नहीं है प्रन्तु यह विश्वपालक के साथ संबन्धों को दर्शाता है।

❋ अल्लाह पाक ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को सभी लोगों की ओर इस्लाम का पवित्र संदेश देकर भेजा।

अललाह पाक ने फरमायाः

(قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۖ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ الَّذِي يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَكَلِمَاتِهِ وَاتَّبِعُوهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ) سورة الأعراف :١٥٨

अर्थः (आप) कह दीजिए कि हे लोगो मैं तुम सभी की ओर उस अल्लाह का भेजा हुआ हूँ जिसका राज्य सभी आकाशों तथा धरती में है, उसके अतिरिक्त कोई भी इबादत के योग्य नहीं, वही जीवन प्रदान करता है तथा वही मृत्यु प्रदान करता है। इसलिए अल्लाह के प्रति तथा उसके अभिज्ञ दूत के प्रति विश्वास करो। जो कि अल्लाह

पर तथा उसके आदेश पर ईमान रखते हैं तथा उनका अनुसरण करो ताकि तुम सत्य मार्ग पर आ जाओ | सूरःआराफ़-158

अल्लाह पाक ने फरमाया :

(وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا كَافَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ)
سورة سبأ:٢٨

अर्थः (तथा हमने आपको सभी लोगों के लिए शुभसूचनायें सुनाने वाला तथा सर्तक करने वाला बनाकर भेजा है | परन्तु (यह सत्य है कि) लोगों में अधिकतर अज्ञानी हैं |) सूरःसबा-28

इस्लाम स्वीकार करना बहुत ही सरल तथा आसान है, मात्र अल्लाह के एकेश्वरवाद तथा तौहीद की और अल्लाह के अन्तिम सत्य पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ईश्दौत्य की गवाही देना | तथा यह प्रसिद्ध अरबी भाषा का शब्द पढ़ कर ईमान की गवाही है, और वह शब्द यह हैः

((अश्‌हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु व अश्‌हदु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहु, व अश्‌हदु अन्ना रसूलुल्लाहि हक्कुन व अश्‌हदु अन्नल्‌-जन्नता हक़्कुन वन्‌-नार हक़्कुन |))

अर्थः मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं तथा मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम

अल्लाह के बन्दे तथा रसूल हैं, तथा मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के रसूल सत्य हैं स्वंग तथा नर्क सत्य है।

(ادْعُ إِلَىٰ سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ ۖ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ ۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ ۖ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ) سورة النحل:١٢٥

अर्थः (अपने रब की ओर लोगों को बुद्धि तथा अच्छी शिक्षा के साथ बुलायें और उन से अच्छे प्रकार बात करें, निस्संदेह आप का रब अपने मार्ग से भटकने वालों को भी अच्छी तरह जानता है तथा वह अपने मार्ग पर चलने वालों को भी पूरी तरह जानता है) सूरःनह्ल-125